UNIVERSAL LIBRARY

OU_180830

UNIVERSAL LIBRARY

मिरज़ा जंगी

H 82
C 43M

OUP—68—11-1-68—2,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82 C43M Accession No. P. G. H1840

Author चगताई, मिर्जा आजीमबेग

Title मिरजा जंगी तथा अन्य प्रहसन. 1951.

This book should be returned on or before the date last marked below.

मिरज़ा जंगी

तथा

अन्य प्रहसन

लेखक

स्वर्गीय मिरज़ा अजीमबेग चग़ताई

बी० ए०, एल-एल० बी०

प्रकाशक

छात्रहितकारी पुस्तकमाला

दारागंज, प्रयाग

तृतीय संस्करण] १९५१ [मूल्य १)

प्रकाशक
श्री केदारनाथ गुप्त, एम० ए०
छात्रहितकारी पुस्तकमाला
दारागंज, प्रयाग ।

मुद्रक
सरयू प्रसाद पांडेय 'विशारद'
नागरी प्रेस, दारागंज
प्रयाग

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ
१—मिरज़ा अज्जी	...	...	१–३६
२—शादी की ज़रूरत	...	...	३७–६२
३—बेरज़ामन्दी	...	...	६३–९२
४—नौजवान डाक्टर	...	...	९२–९६

—:○:—

मिरज़ा जङ्गी

पात्र—

१—जान आलम बादशाह वाजिद अली शाह
२—प्रधान मन्त्री
३—युद्ध मन्त्री
४—मिरज़ा जंगी
५—बब्बन खाँ गोलन्दाज़
६—नब्बन साहब
७—पुत्तन साहब
८—आगा साहब
९—अमदू नाई
१०—फत्तू पड़ोसी
११—बेगम मिरज़ा जङ्गी
१२—दरबारी और नौकर इत्यादि

प्रथम अंक

पहला दृश्य

(स्थान—अँगरेजी दूत से कह दिया गया है कि बादशाह सलामत को इस शर्त पर सिंहासन छोड़ना मंजूर नहीं, कि ज्यादा पेन्शन मिलेगी, और हिज मैजिस्टी की पदवी रहेगी। इस अल्टीमेटम के जवाब में कानपुर से अँगरेजी फौज के हमले का डर है।)

बादशाह सलामत—ये फिरंगी अब कानपुर से गोरों की फौजें जरूर लायेंगे।

एक दरबारी—जहाँपनाह का इकबाल बना रहे। कसम है, अपने लायक हुजूर की एक नहीं, अगर कम्पनी हजार पल्टनें भेजे, तो क्या हो सकता है? हुजूर की जूती की किरणें तो मैली न होंगी।

प्रधान मन्त्री—हुजूर का राज्य कायम रहे। जहाँपनाह के इकबाल का सूरज दोपहर पर है। जनाब अमीर की कसम कि ये अनवरी और हैदरी वे फौजें हैं, जिन्होंने बिझौड़ा में रूहेलियों के जोड़-जोड़ अलग कर दिये तो पानीपत के मैदान में मरहठों को पानी का घूँट-सा ले लिया।

युद्ध-मन्त्री—बलिहार जाऊँ हुजूर पर। हूँ! ये हैदरी और अनवरी तो पानीपत के ऐसे मार्चों के लिए हैं। फिर हुजूर की फौजें भी हुजूर के इकबाल की छाया में आराम कर रही हैं। हुजूर के इकबाल और दबदबे का यह हाल है, कि कानपुर से यहाँ आना तो बड़ी बात है। कसम है हुजूर के रकाब की, कि हुजूर के इकबाल और दबदबे का यह हाल है, कि (दरबारियों की ओर मुँह करके) खुदा की कसम, अगर लखनऊ की ओर मुंह करके कोई गोरा भी हो जाय तो वह हुजूर के इकबाल और दबदबे से औंधे मुंह गिरेगा।

दरबारी—(एक आवाज में) माशा अल्लाह, माशा अल्लाह जुमदन अल्लाह !!! कैसा हुजूर का इकबाल है।

जान आलम—(मुस्कुराकर) लेकिन सुना है कि गोरे रोज फौजी काम करते हैं, रोज फौजी मश्क करते हैं।

युद्ध-मन्त्री—हुजूर सच कह रहे हैं। मैंने भी सुना है। जनानी सूरतें, न दाढ़ी न मूंछ। सवेरे तड़के वहाँ कायदा ही अनोखा है। एक आदमी खड़ा हो गया, और हुक्म दे रहा है,

कि 'चले जावो।' बे मतलब धक्का मारता है। भला ऐसी धक्की-धारी फौज क्या लड़ेगी और फिर हुजूर के गुलामों से।

पूरा दरबार— अजी हुजूर ये गोरे क्या लड़ सकते हैं... खुदा की कसम, इनकी समझ ही क्या......खुदा की कसम, एक डाँट के भी तो नहीं।

(पर्दा गिरता है)

दूसरा दृश्य

(स्थान—मिरज़ा जंगी का दीवानखाना)

(नोट—मिरज़ा जंगी नकटे नहीं, उनके गले में कोई रोग नहीं, ये नाक के बल से भी नहीं बोलते, लेकिन उनकी आवाज में कुछ ऐसी गुनगुनाहट है, कि बात करने में नाक के बल से बोले जाने वाले लफ्ज आस-पास गूँज जाते हैं। मिरज़ा जङ्गी की सही आवाज को अगर आप मालूम करना चाहें तो जरूरी है कि 'फ' या 'व' को इस तरह बोलें, कि शुरू से आखिर तक नाक के बल से बोला जानेवाला लफ्ज न उसमें मिल जाय, बल्कि 'ह' की पुट भी उसमें मौजूद रहे। इन बातों को अच्छी तरह समझे बिना अगर किसी ने नाटक किया तो ठीक नहीं। अच्छी तरह समझ लीजिये, कि नाक के बल से बोला जानेवाला 'न' मौजूद है। और उनमें 'ह' का पुट भी है।)

(मिर्ज़ा जंगी खिजाब का ढाढा बाँधे, बटेर की टाँगे मुँह में लिए बैठे देख रहे हैं और नब्बन साहब और पुत्तन साहब पंजा लड़ा रहे हैं। इतने में बब्बन खाँ गोलन्दाज आते हैं)

बब्बन खाँ—खुदा की कसम.........तुम्हें खुदा की कसम नब्बन साहब.........कैसा पंजा कसा है। लोहे का पंजा भी होता टूट तो जाता। लेकिन शाबाश है। पुत्तन साहब की उंगलियों की......(दोनों पंजा लड़ाना छोड़कर "आदाब अर्ज, आदाब अर्ज" करने लगते हैं और आपस में एक दूसरे की तारीफ करते हैं।)

नब्बन साहब—पुत्तन साहब से हाथ मिलाना कोई मामूली बात है।......वह लोच है, कि खुदा की कसम, मालूम होता है, कि फौलाद लचक रहा है।

पुत्तन साहब—(झुककर) आदाब अर्ज, आदाब अर्ज ! अजी हजरत, सिर्फ कभी हाथ मिला लेता हूँ। नहीं तो अब बिलकुल छोड़ ही चुका हूँ। लेकिन जनाब आप का हाथ है ! मालूम होता है कि शेर की कलाई में पंजा लगा है। खुदा की कसम, ऐसा पंजा लगता है कि खुदा हाफिज !

मिर्जा जंगी—अजी हजरत, वह शेर अफगन कूँच कर गया।

बब्बन खाँ— चौंककर खुदा उसे बहिश्त दे। खुदा की कसम......कब?......गजब हो गया। अभी तो चार कुश्तियाँ मारी थीं ! खैर, खुदा की मरजी.........तो फिर आगा साहब के यहाँ इस गम में मातमपुरसी के लिए भी जाना है। अजी हजरत, खुदा की कसम, मैं भी अजीब आदमी हूँ भाई, तुम्हारे सिर की कसम जरा गौर तो करो, कि आये थे घर से कुछ गोरों की बातें और......आये ...कुछ और भी सुना। फौजदार साहब ने कहला भेजा था कि मेरी किस्मत के दुश्मन... गोरों से लड़ाइयाँ होंगी, तोपें ठीक करनी चाहिये......जरा गौर करो, कि एक तोप तो वह "हंसरा..." है जिसमें बिल्ली ने बच्चे दिये हैं। छोटी लड़की को जब यह बात मालूम हुई, तब वह मचलकर कर बैठी। दूसरी तोप 'मोहनी' में कटेरी का दाना रक्खा हुआ है और तीसरी 'अनोखिया' है। इसमें अभी पिछले दिनों की बात है कि मेरा तीलियों का दरबा टूट गया, मेरे बाज रहते हैं। चौथी में घरवाली कोयला बुझाकर रखती है। अब पुत्तन साहब, तुम्हीं बताओ कि कौन-सी तोप खाली है मेरे पास, जिसे मैं गोरों के लिए निकलवाता फिरूँ। न मालूम किस तरह दीवानखाने से ढकेल कर भीतर पहुँचवाई है।"

मिरजा जंगी—लाहौल बिलाकूह! न गोरे, न काले! अपने आप कहाँ-कहाँ की बातें इन लोगों को सूझती हैं। भला गोरों की शामत आई है, जो लखनऊ की ओर रुख करेंगे। महीनों से सुन रहे हैं, कि आते हैं और अब आयेंगे, लेकिन न नाम, न निशान, अजी हजरत, हम तो खुद कहते हैं, कि आयें तो जरा दिल की भी निकले। जरा हम भी तो अपनी तलवार म्यान से खींचें।

नब्बन साहब—मेरी समझ में ही नहीं आता। खुदा की कसम, ये गोरे क्या खाक लड़ते होंगे। खुदा की कसम, यदि कहीं आ जायें, तो मजा आ जाय।

पुत्तन साहब—सुना है, कि ज्यादातर बन्दूकों से ही लड़ते हैं।

मिरजा जंगी—लाहौल बिलाकूह........जनाने कहीं के! तभी तो अभागे दाढ़ी-मूँछ नहीं रखते। लाहौल बिलाकूह! अभी हजरत हमें भी हुक्म मिला था, कि बन्दूकें चलाओ! पहली ही बार में दाढ़ी में चिनगारी पड़ गई। लाहौल बिला-कूह! वह भी क्या हथियार है, जिसके लिए दाढ़ी-मूँछें साफ करके जनानी सूरत बनानी पड़े। देखो बन्दूकचियों को! लाहौल जान पड़ता है, कि जनानों की फौज चली जा रही है। लाहौल बिलाकूह! बन्दा तो तेज़ तलवार का हिमायती है।

बब्बन खाँ—तो चलिये हज़रत जरा आगा साहब के यहाँ मातमपुरसी कर आयें।

मिरजा जंगी—अभी आया। बस अँगरखा पहन आऊँ।

(भीतर जाते हैं)

(बाहर इन्तजार हो रहा है और जब देर हो जाती है और मिर्जा जंगी बाहर नहीं आते, तो बब्बन खाँ पुकारते हैं।)

बब्बन खाँ—"अजी हजरत मिर्जा साहब······क्या घर के ही हो गये······।"

(मिरजा जङ्गी हाथ में अँगरखा लिए कुछ रंजीदा निकलते हैं और अपनी जेब दिखाकर कहते हैं।)

मिरजा जंगी—तुम्हें खुदा की कसम, जरा देखो तो सही! घरवालों से भी नाक में दम है।

पुत्तन साहब—जेब कौन कतर गया ?

मिरजा जंगी—अमें, वही चूहे, खुदा की कसम, फिर घर में तो बोलना मुश्किल है। अभी कल ही की ही बात है। शाम को पुत्तन साहब के यहाँ से आये। जेब में परसों का कबाब पड़ा हुआ था; खटिया पर अँगरखा डाल दिया। चूहे काट गये। घर में किसी से इतना भी न हुआ, कि उठाकर रख तो दे!

नब्बन साहब—तो क्या फिर इस वक्त नहीं चलना है ?

मिरजा जंगी—चलना क्यों नहीं है ? अमें, दूसरा अंगरखा निकाला है। जरा पुस्तीनें चुनी जा रही हैं। वरना अभी चलते हैं।

(थोड़ी देर के बाद मिरजा जङ्गी अँगरखा पहन कर सबके साथ आगा साहब के यहाँ शोक प्रकट करने के लिए चल देते हैं।)

(पर्दा गिरता है)

तीसरा दृश्य

स्थान—आगा साहब का दीवानखाना

(आगा साहब मसनद पर रंजीदा चुपचाप बैठे हुए हैं। पाँच-छः आदमी गम ज़ाहिर करने के लिए आये हुए हैं। इतने में मिरजा जङ्गी बब्बन खाँ, पुत्तन साहब और नब्बन साहब के साथ मातमपुरसी करने के लिए पहुँचते हैं। 'आदाब अर्ज' 'आदाब अर्ज' के बाद बैठ जाते हैं। सभी चुपचाप हैं।)

मिरज़ा जंगी—आज मुझसे नब्बन साहब ने कहा तो मुझे यक़ीन न हुआ।

नब्बन साहब—हज़रत, वह बात ही ऐसी थी, कौन कह सकता था, कि अचानक·········

पुत्तन साहब—क्षमा, यह तो ख़ुदाई कहर है। सब्र रखने के अलावा क्या बस है? इसके कारखाने ही अनोखे हैं। कैसे कैसे जवान पल भर में लेट जाते हैं।······हज़रत, ज़्यादा से ज़्यादा दस दिन हुए होंगे·····जिन लोगों ने देखा है, उन्हीं से पूछिये कि सैयदी बहराम (ईरान का एक वीर बादशाह) सा हट्टा-कट्टा चुटकियों में ख़तम हो गया।

मिर्ज़ा जंगी—सुनते हैं, कि पन्द्रह मिनट भी तो नहीं लगे और सैयदी बहराम ख़तम हो गया।

आग़ा साहब (बिसूरती आवाज़ में)—मरने से आध घण्टा पहले मैंने ख़ुद उसे देखा था।

नब्बन साहब—अजी हज़रत, काल पर किसी का बस है?

मिरज़ा जंगी—आपने शेर अफ़गन को तो देखा ही होगा। (कुहनियाँ उठाकर) ऐसा सीना था।

पुत्तन साहब—शेर की सी गर्दन थी' (अपने दोनों गालों से फीट-फीट भर की दूरी पर हाथ पहुँचा कर।)

एक साहब—हज़रत, गर्दन और जबड़ा तो निराले ही थे।

दूसरे कोई और—फिर ताक़त और मज़बूती!

मिर्ज़ा जंगी—बस दुश्मन से पूछिये, ख़ुदा की क़सम!

दूसरे कोई और—अजी जनाब, असल में बात तो यह है, कि ख़ास चीज़ मिहनत और गिज़ा है। क्या मुँह है किसी का जो आग़ा साहब के बराबर ख़र्च कर सके। एक-एक कुश्ती की तैयारी में ढाई हज़ार तीन हज़ार ख़र्च पड़ा था। चौदह उस्ताद! एक से एक माहिर और फिर डेढ़-डेढ़ सौ की दानों

वक्त खुराक। जिसकी ऐसी खातिरदारी और सेवा हो, उसकी ताकत का हज़रत पूछना ही क्या है।

आगा साहब—मर्जी जनाब, मैंने शेर अफगन पर इन दो साल के बीच में अट्ठाइस हजार रुपये खर्च कर दिया।

मिरजा जंगी—लेकिन जनाब, यह जान खींच लेने वाली मुसीबत किस तरह आई, यानी बेरहम काल ने किस तरह आप पर यह जुल्म ढाया और किस तरह यह जान मार डालने वाली बुरी बला आई?

आगा साहब (रोने के स्वर में—हजरत न पूछिये······ बात असल में यह हुई कि परसों मैंने शेर के लिए यखनी (शोरवा और एक तरह का गोश्त) तैयार कराई था। रात को गरम गरम यखनी आई। मैंने खुद अपने हाथ से ही घूँट पिलाये। इससे ज्यादा न मैं पिलाना चाहता था और न गुंजाइश थी। मैं तो हजरत यखनी आलमारी पर रखने लगा, कि अचानक बिल्ली सामने से उसे झपट ले गई।

पुत्तन साहब—(रंज से उछलकर) ऐ, है!! गजब हो गया।······फिर हजरत ने छुड़ाने की कोशिश नहीं की।

आगा साहब—(आँसू पोछते हुए) अजी हजरत, मैं दौड़ा हुआ बाहर दरवाजे तक गया, लेकिन कुछ पता न चला। हाँ एक रास्ता चलनेवाले ने अलबत्ता बताया कि बिल्ली बटेर लिए हुए इसी ओर गई है। बहुत खोजा, लेकिन दो-तीन परों के अलावा उसने कुछ निशानी······तक न छोड़ी······ई···ई··· (रोते हुए करुणा भरे स्वर में)

(आगा साहब फूट फूट कर रोते हैं और लोग सब्र की बातें करते हैं)।

मिरजा जङ्गी—अजी हजरत, खुदा पर भरोसा कीजिये।

पुत्तन साहब—जनाब······सब्र रखिये।

नब्बन साहब—खुदाई कहर पर क्या बस है हजरत···!

मिरजा जङ्गी—जरा दिल कड़ा कीजिये·····जनाब सब्र कीजिये।

आगा साहब (रुआसे स्वर में मिरजा जङ्गी के गले में हाथ डाल कर)—सब्र नहीं किया जाता·····किस तरह दिल को चीरकर दिखाऊँ! कलेजा टुकड़ा टुकड़ा हो जाता है! खुदा की कसम··· आह····· आ·····ह (रञ्ज भरे स्वर में)

मिरजा जङ्गी—मुसीबत ही ऐसी है हजरत! खुदा आपको सब्र दे।

आगा साहब—दुनिया अंधेरी-सी है (रोते हुए) अंधेरी है····य·····खुदा की कसम·····

(छत पर से एक बिल्ली कूदती है और शोर गुल के साथ बैठे हुए लोगों में तहलका मच जाता है। सब लोग इधर-उधर हो जाते हैं, और डरावने शब्दों के साथ चिल्लाते हैं। या खुदा···चीं···कीं··· लेना···तलवार···दौड़ना···पकड़ना···जाने न पाये, इत्यादि)

(सब के सब जो जिसके हाथ में आता है, लेकर बिल्ली के पीछे दौड़ते हैं।)

(पट परिवर्तन) (पर्दा गिरता है)

—:o:—

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(एक कमरे के भीतर बिल्ली घिरी हुई है, कमरे के बाहर ये सभी लोग आपस में सलाह करते हैं!)

मिरजा जङ्गी—अजी हजरत, तलवार मँगा लीजिये। खुदा की कसम, यह बन्दा भीतर जाकर इस बदजात को दूर कर देगा।

पुत्तन साहब—अजी हजरत, यह बिल्ली है, खिलवाड़ नहीं है। टेंटुआ दबा लेती है।

आगा साहब—खुदा की कसम, खिलवाड़ न समझियेगा। आपने सुना नहीं कि, बिल्ली को मारने में आँख और गले के लिये ज्यादा डर रहता है।

नब्बन साहब—अजी हजरत, सुना तो हमने भी है, जब वक्त होकर बिल्ली टेंटुआ पकड़ती है, तब फिर नहीं छोड़ती······ खुदा की कसम!

बब्बन खाँ—अमें हम बतायें तुम्हें, खुदा की कसम···यह करो, कि बहुत से कपड़े हम सब लोग अपनी-अपनी गर्दन में लपेट लें और फिर उसे मार डालें।

आगा साहब—मारिये जनाब, इसे।

मिरजा जज़्ज़ी—अजी हजरत आप ही लीजिये न! तकल्लुफ किसलिये!

(आगा साहब नौकर को पुकारते हैं। नौकर बहुत से कपड़े और गूदड़ लाता है। सब लोग अपनी-अपनी गरदन में लपेट कर कमरे में घुस जाते हैं, बिल्ली को ढूँढ़ते हैं। उसे एक आलमारी में छिपी हुई पाते हैं। सब लोग जाकर उसे घेर लेते हैं।)

आगा साहब—(मिरजा जज़्ज़ी से) अजी हजरत, खुदा की कसम आ······आप!

मिरजा जज़्ज़ी (नब्बन साहब से)—लीजिये हजरत (तलवार देते हुए) खुदा की कसम, आप।

नब्बन साहब—अजी हजरत! खुदा की कसम आप!

आगा साहब (मिरजा जज़्ज़ी से)—खुदा की कसम, मिरजा साहब आप तो तकल्लुफ कर रहे हैं। हजरत लीजिये भी तो।

(मतलब यह कि जब खूब 'अजी हजरत आप, अजी हजरत आप'

हो चुकती है, और सब मिरजा जङ्गी से कहते हैं, कि आप ही लीजिये, तो मिरजा जङ्गी उसको इस तरह मंजूर करते हैं।'

मिरजा जंगी—आदाब अर्ज, आदाब अर्ज (सब को सलाम करके तलवार लेते हैं, और कहते हैं) खैर, आप सब लोग तो तकल्लुफ करते हैं।

(यह कह कर मिरजा जङ्गी 'या अली' कहकर तलवार चूमकर पैतरे बदलते हैं और आखिर में बिल्ली के ऊपर एक वार करते हैं। जो बिल्ली को न लग कर आलमारी के एक किनारे पर लगता है। उसके लगते ही तारीफ का शोर गुल होता है और सब एक आवाज में कहते हैं।)

सब लोग—या शुभान अल्लाह!

पुत्तन साहब (उछलकर)—खुदा की कसम, मिरजा साहब किस तरह बाल-बाल बचा है।

नब्बन साहब—कमाल कर दिया है, खुदा की कसम!

मिरजा जंगी—(दाहिने हाथ से तलवार बायें हाथ में लेकर)—'आदाब अर्ज है, आदाब अर्ज है।'

(चारों ओर की तारीफ का जवाब सलामों से देते हैं)

पुत्तन साहब—आप मिरजा साहब जल्दी कीजिये।

मिरजा जंगी—मैं बिल्ली को बैठे-बैठे अब क्या मारूँ। दूसरी जगह निकालता हूँ और आलमारी से कूदते ही मैं तलवार से चार टुकड़े कर दूँगा।

(मिरजा साहब पैंतरा बदल रहे हैं। उधर पैंतरा बदल कर मिरजा साहब ने तलवार की नोक बिल्ली के मुँह के समाने की ओर उसे थपकी देकर मारा। इधर वह जो फश करके भीत पर उछलकर निकली, मिरजा जंगी ने 'या खुदा' कह कर जो वार किया, तो वह खाली गया। बिल्ली भाग गई।)

नब्बन साहब—कैसा हाथ मारा है!

पुत्तन साहब—लाल बाल बची, खुदा की कसम !

आगा साहब—खुदा की कसम, कैसा कमाल दिखाया है।

बख्शन खाँ—भई मिरजा, तुम्हें खुदा की कसम......शुभान अल्लाह।

(मिरजा साहब तलवार बायें हाथ में लिए चारों तरफ झुक झुककर सलाम कर रहे हैं, और चारों ओर से, 'क्या खूब', 'शुभान अल्लाह कैसा हाथ मारा था, इत्यादि हो रहा।)

(पर्दा गिरता है)

दूसरा दृश्य

(स्थान—बादशाह का दरबार। शहर से तीन भिखारी पकड़ कर लाये गये हैं, जिन्होंने यह झूठी खबर उड़ा रक्खी थी, कि गोरों की फौजें राज पर कब्जा करती चली आती हैं। शहर में हुल्लड़ होने पर ये पकड़े गये और बादशाह के दरबार में हाजिर किये गये। वहाँ इन्होंने यह बताया कि उनके गाँव से तीन मील की दूरी से अँगरेजी फौजें लखनऊ की तरफ आगे बढ़ी हैं। इधर उन्होंने यह कहा, और उधर प्रधान मंत्री उन्हें डपट कर बोले।)

प्रधान मन्त्री—हुजूर, इनका चीभें कटवा लेनी चाहिये।

युद्ध मन्त्री—इन मरदूदों को इस कुसूर के बदले में जिन्दा ही चुनवाने का हुक्म दिया जाये !

एक दरबारी—जहाँपनाह का इकबाल बना रहे। कसम है जनाब की, ये तीनों बिलकुल झूठे हैं। शाही एकबाल है कि खिलवाड़ है।

दूसरा दरबारी—हुजूर की जूतियों पर बलिहार जाऊँ ! ताज्जुब तो यह होता है कि (दूसरे की तरफ देखकर) ये लोग ऐसी बातों को सच कैसे मान लिये हैं ?

प्रधान मन्त्री—हुजूर, खुद सोचें। बन्दे की तो अक्ल नहीं

काम करती ! भला लोग सोच ही कैसे सकते हैं, कि गोरे इधर का रुख भी करेंगे।

युद्ध मन्त्री—जहाँपनाह, इन तीनों कुसूरवारों को इस अनोखे और बहुत बड़े क़सूर के बदले में जिन्दा ही चुनवा देने का हुक्म दिया जाय !

बादशाह—ठीक ! ये इसी सजा के लायक हैं।

(तीनों भिखारी हाथ जोड़ तथा दोनों घुटने टेककर माँफी माँगते हैं, और बादशाह को दुआ देकर फिर कहते हैं कि 'हम झूठ नहीं बोलते हैं।')

(चोबदार बढ़ते हैं, और उन्हें पकड़ कर ले चलते हैं।)

प्रधान मंत्री (डांटकर)—कमबख्तो, चुप रहो। चोबदार…!

प्रधान मंत्री—अभी-अभी इन तीनों को ले जाओ और राज के मजदूरों को बुलवाकर जिन्दा ही चुनवा दो।

(चोबदार तीनों को लेकर बाहर निकलते हैं, और फी आदमी आठ आने लेकर छोड़ देते हैं।)

(पर्दा गिरता है।)

तीसरा दृश्य

(**स्थान**—शाही महल के दरवाजे पर तीन चौधरी और चार ताल्लुकेदार अपने कुछ सिपाहियों के साथ आकर दुहाई देते हैं, कि 'दुहाई है बादशाह आलम की', गोरों ने उत्तरी इलाका लूट लिया, गाँवों पर कब्जा कर लिया, और जल्दी-जल्दी डबलमार्च करते हुए लखनऊ की ओर आ रहे हैं। प्रधान मन्त्री और युद्ध-मन्त्री को खबर दी जाती है, और वे दौड़कर आते हैं। उन्हें चुप कराकर भगा देते हैं। दूसरे दरबारियों से सलाह करते हैं, और तै होता है कि बादशाह से कहना चाहिये।

दरबार लगा है, बादशाह दरबारियों सहित बैठे हुए हैं। बादशाह के साथ दो परियाँ भी हैं। बादशाह खुद राजा इन्द्र के भेष में हैं। जमा हुआ अखाड़ा छोड़कर सिर्फ थोड़ी देर के लिये आते हैं।)

प्रधान मन्त्री—(एक दरबारी की ओर देखकर मानों बादशाह को सुनाने के लिए) अजी हजरत, वह कुछ गोरों और फिरंगियों वाला मजाक भी सुना ? खुदा की कसम, रहेगा तो बड़ा मजा ?

एक दरबारी—(जान बूझ कर अनजान बनते हुए) अजी हजरत क्या हुआ ?

प्रधान मन्त्री—हुआ क्या ! खुदा की कसम, फिरङ्गियों की शामत आगई, मौत के मुँह में कूद रहे हैं।

दूसरा दरबारी—गोरे भी अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरते हैं।

प्रधान मन्त्री—अजी हजरत, वही मसल है, कि चींटी के पर निकल आये।

तीसरा दरबारी—जहाँपनाह की जूतियों की कसम ! जरा उनकी अक्ल तो देखिये ! सुनते थे, फिरंगियों की जाति बड़ी समझदार होती है, लेकिन देखने से तो कुछ और ही मालूम हुआ।

युद्ध मन्त्री—किसी ने सच कहा है, कि 'गीदड़ की मौत आती है तो शहर की ओर भागता है और फिरङ्गी की मौत आती है तो ?'.......

सब लोग—(एक आवाज में) लखनऊ की ओर।

(बादशाह हँस देते हैं)

बादशाह—फिर इन्तजाम क्या है ?

एक—जहाँपनाह, तोपखाना भेज दिया जायगा। वह गोरों को 'भक' से उड़ा देगा।

दूसरा—अजी हजरत, हम बन्दूक की गोलियों का ऐसा निशाना मारेंगे, कि गोरों की किस्मत ही फूट जायगी। कसम है जहाँपनाह की, हम बन्दूकची अपनी बाढ़ से गोरों को साफ न कर दें तो मेरा नाम नहीं !

तीसरा—सभी जनाब, जहाँपनाह के हुक्म की देर है। हैदरी और अनवरी गोरों के छक्के छुड़ा देंगी।

प्रधान मंत्री—कसम है जहाँपनाह अमीर की, बस सिर्फ जहाँपनाह के हुक्म की देर है।

बादशाह—(युद्ध मंत्री से) तुम बताओ, तुम्हारा क्या ख्याल है?

युद्ध मंत्री—(अदब से झुककर) हुजूर का इकबाल है। (सब एक आवाज में 'आमीन' 'आमीन' कहते हैं) बुजुर्गों की मेहरबानी रहे। इस खादिम ने इन्तजाम तो कर लिया है, लेकिन (हाथ जोड़ कर) बस सिर्फ एक ही ख्याल है।

बादशाह—वह क्या...... अनवरी और हैदरी काफी होंगी।

युद्ध मंत्री—हुजूर की जूतियों पर बलिहार जाऊँ! अनवरी और हैदरी को भेज कर क्या करूँगा?

बादशाह—तोपखाना ही काफी होगा?

युद्ध मन्त्री—हुजूर, भला तोपखाने की क्या जरूरत है? एक से एक तोप है। बच्चे डर जायँगे। हुजूर के कानों को नुकसान पहुँचेगा, शहर वाले चौंक पड़ेंगे। बहादुर उछल पड़ेंगे, तोपखाना क्या होगा?

बादशाह—फिर क्या ख्याल है? क्या रिसाला भेजोगे?

युद्ध मन्त्री—हुजूर, घोड़ों की टापों से गर्द का तूफान उठेगा। सबके कपड़े गन्दे हो जायँगे, दम घुटने लगेगा, आँखों में गर्द समा जायगी, और बालों में रेत ही रेत हो जायगी।

बादशाह (मुसुकरा कर)—अनवरी हैदरी नहीं भेजते, तोपखाना नहीं भेजते, रिसाला नहीं भेजते, फिर आखिर क्या इरादा है?

युद्ध मन्त्री—(आगे बढ़ कर)—हुजूरवाला की बादशाही बनी रहे। क्या पिद्दी क्या पिद्दी का शोरबा, फौजें, तोपखाना और

रिसाले जाते हैं फौजों से लड़ने के लिये, न कि गोरों की भीड़ को भगाने के लिये। इस खादिम की सलाह यह है, कि शहर वालों का कुछ तकलीफ जरूर होगी, लेकिन लाचारी है, पिंजड़े बनाने वालों से बाँस के लटठे खरीद लिये जायँगे और शहर की मेहतरानियों को दे दिये जायँगे। उनसे कह दिया जायगा, कि वे जूही के मैदान में जाकर मार-मारकर गोरों को निकाल दें।

सब दरबारी (एक आवाज से)—शुभान अल्लाह !······हुजूर का इकबाल है······ये गोरे हैं क्या चीज······मेहतरानियाँ ही काफ हैं······शुभान अल्लाह !

(चारों ओर से तारीफ की आवाजें उठती हैं और युद्ध-मंत्री चारों ओर घूम-घूमकर 'आदाब अर्ज' ······'आदाब अर्ज' इस तरह कह रहे हैं, कि बस गर्दन झुकी हुई है, और हाथ के पंजे में कमानी लग गई है।]

(पर्दा गिरता है)

चौथा दृश्य

स्थान—सड़क बाजार)

ढिंढोरा पीटने वाला—खल्क खुदा का,······मुल्क बादशाह का······हुक्म फौजदार साहब का·········अनवरी, हैदरी सभी बादशाही फौजें गोरों को काट-काट टुकड़े कर डाल दें।

(कड़म धुम, कड़म धुम)

"खल्क खुदा का······मुल्क बादशाह का·········हुक्म फौजदार साहब·········गोरों को काट कर बहादें।"

(कड़म धुम, कड़म धुम, कड़म धुम,)

खल्क खुदा का······मुल्क बादशाह का······हुक्म फौजदार साहब का······जो कोई गोरों को बचायेगा, वह चुन चुन के मारा जायगा।"

(कड़म धुम, कड़म धुम)

(मिरजा जङ्गी, नब्बन साहब और पुत्तन साहब भी आते हैं। मिरजा जङ्गी अपनी खास धुन में हैं। दोनों हाथों में बटेरें हैं। ऊपर रूमाल पड़े हुए हैं।)

मिरजा जङ्गी—अजी हज़रत, ज़रा इस अनोखे हुक्म को तो सुनिये !

नब्बन साहब—खुदा कसम—मतलब यह कि पुत्तन साहब से परसों के लिये जो चिड़ियों के लड़ाने का निश्चय हुआ है, वह यों ही रह जायगा।

पुत्तन साहब—ज़रा इस इन्तज़ाम को तो देखो। कल शाम तक सब चल दें। मतलब कि परसों भी चिड़ियों की लड़ाई न हो, लाहौल विला कूवत !

मिरजा जङ्गी—इसमें यह भूल है। खुदा की कसम, ज़रा गौर तो करो, कि अगर हम सब लोग कल ही गोरों की ओर चल दें तो पुत्तन साहब यही कहेंगे, कि भगोड़े थे, मैदान छोड़ गये। मुँह छिपाते फिरते हैं।

नब्बन साहब—फिर इसके अलावा बात यह है हजरत कि बन्दा तो तैयार ही नहीं हो सकता। धोबिन कपड़े नहीं ले आई। यकायक जो घर जाकर कहेंगे, तो खुदा की कसम कि मुझसे दिन के दिन कुछ नहीं हो सकता।

(पर्दा गिरता है)

पाँचवाँ दृश्य

[एक सप्ताह बीत चुका है। जब ढिंढोरा पीटा गया था। गोरों की फौज के आने-आने का शोर गुल मच रहा है। मिरजा जगी फौजदार बहादुर से मिल कर इस मोर्चे का पूरा भार स्वयं ले चुके हैं और प्रधान अफसर नियत हुए हैं। इन्हें यह अधिकार मिला है, कि जैसा चाहें करें, जिस प्रकार हो, हमले को रोकें। सभी फौज को तैयार होने का हुक्म दे दिया है। और स्वयं भी तैयार होने में संलग्न हैं।]

(स्थान—मिरजा जङ्गी का दीवानखाना। सब लोग बैठे हुए हैं। इसी समय फुत्तू आता है।)

मिरजा जंगी—अमा फत्तू, ज़रा अमदू को लपक कर पकड़ तो लाओ। कहना, कि मिरजा साहब बुलाते हैं। कल्ह गोरों की लड़ाई पर जा रहे हैं। खत बना जाये।

(फत्तू बहुत अच्छा कह कर जाता है)

नब्बन साहब—अजी हज़रत, खिज़ाब भी तैयार करा लिया ?

मिरजा जंगी—खुदा की कसम, तुम भी क्या बातें करते हो! कल्ह जा रहे हैं, और खिज़ाब न तैयार कराते। तुम अपनी बटेरों की थैलियाँ भी ले चलना। फुत्तू साहब से भी मैंने कह दिया है। वे भी पहुँच जायंगे। नहीं तो अहमद तीलियों का दरबा लेकर पहुँच जायगा।

(सामने से जुम्मन निकला तो मिरजा जङ्गी पुकारते हैं)

मिरजा जंगी अमे जुम्मन······अ जुम्मन!

(वह देखता है। ये हाथ से संकेत करते हैं और वह आ जाता है)

मिरजा जंगी—(मुसकुरा कर) तो फिर चल रहे हो न! अमजद को भी ले लेना।

जुम्मन—अमजद कहता है, कि मेरे पास कोई अँगरखा नहीं है।

मिरजा जंगी—अमें हम दे देंगे। तुम कह देना उससे। (नब्बन साहब की ओर देखकर) अजी जनाब, मेरी कोशिश है, कि जहाँ तक मुमकिन हो, बटेरों के सभी शौकीन साथ में हों।

(अमदू नाई आता है, और सलाम करता है)

मिरजा जंगी (अमदू से)—भाई अमदू, आज ज़रा जी लगाकर खत बनाना। देखो न हम गोरों की लड़ाई पर जा रहे हैं। और सब काम मुझे ही सौंपा गया है। ज़रा ऐसा खत

बनाना, कि मेरी सूरत देखते ही गोरों के होश-हवास उड़ जायँ।

अमदू—अजी हुजूर, बस ऐसा ही कीजिये कि आपसा जवान लखनऊ भर में न दिखाई पड़े और आपको देखते ही गोरों की जान सूख जाय।

नब्बन साहब—अजी हजरत, दाढ़ी और मूँछें एक जौ-भर छँटवा दूँ।

अमदू–जी हाँ! बस, यही ठीक है। फिर इस पर खिजाब ऐसी खूबी से लगा दो कि बस देखते ही रहिये।

(अमदू खत बनाता है)

नब्बन साहब—अजी जनाब, क्या सचमुच तोपखाना न ले चलियेगा।

(खत बन रहा है। नाई उन्हें लगभग चित किये दे रहा है। बोल नहीं सकते। अतः एक हुँकार से काम लेते हैं। आइना दाहिना हाथ में चेहरे से गज भर दूर लिये हैं।)

मिरजा जंगी—ऊँ, हूँ, ऊँ। (अर्थात् नहीं)

(नाई पैंतरा बदल लेता है, आइना हाथ में है, लेकिन देख नहीं रहे हैं।)

मिरजा जङ्गी—अजी जनाब, मैं केवल गिने-चुने बहादुर ले जाऊँगा। न मुझे तोपचियों की जरूरत है और न गोलन्दाजों की।

(नाई फिर चित किये देता है)

पुत्तन साहब—हम लोग इस मोर्चे पर अपनी बन्दूकें भी ले चलें या रहने दें।

(मिरजा जंगी इसी समय आइना देखते हैं, और एक ओर की मूँछ बिलकुल कटी हुई देख कर उछल पड़ते हैं)

मिरजा जङ्गी—अबे, यह तुमने क्या किया?

अमदू—क्यों हुजूर, क्या हुआ ?

मिरजा जंगी (अमूद को लात मार कर)—मर्दों की तुमने मूँछ उड़ा दी, और कहता है, क्या हुआ ? ठहर तो जा, तेरे नाई की ! अभी तुझे कतल किये देता हूँ। दुष्ट पाजी !

(लपक कर भीतर तलवार लेने जाते हैं और इधर अमदू गायब)

मिरजा जंगी (तलवार हाथ में)—कहाँ गया वह पाजी नाई का बच्चा ! पकड़ लाओ·····खुदा की कसम नब्बन साहब, अब मैं क्या करूँ·····?

नब्बन साहब—बड़ा पाजी है। हजरत मैं तो बातों में ही लगा था।

पुत्तन साहब—खुदा की कसम, बड़ा शरारती है। एक किनारे से इसने बिलकुल मूँछ काट दी।

मिरजा जंगी (आइना देख कर और सिर पकड़ कर)—अब क्या हो !·······और तो कुछ नहीं हजरत, कोई गोरा देख लेगा, तो क्या कहेगा।

नब्बन साहब—अब इसके अलावा और क्या हो सकता है, कि दूसरी ओर की भी कतर दी जाय।

मिरजा जंगी (आइना फिर देख कर)—खुदा की कसम, बस यह जी चाहता है, कि खुदकशी कर लें। अब क्या फायदा लड़ाई पर जाने से। कैसे किसी को मुँह दिखायें। ऐसे अवसर पर नाक, आँख से बिलकुल ठीक रहना चाहिये, न कि यह हाल ! मैं इस अमदू को मार डालूँगा। खुदा की कसम।

(यह कह कर तलवारें लेकर लपकते हैं, और नब्बन साहब और पुत्तन साहब पकड़ लेते हैं)

नब्बन साहब—अजी हजरत, जाने दीजिये····· ।

मिरजा जंगी (जोर लगाते हुए)—मुझे छोड़ दो। मैं उसे मार डालूँगा। खुदा की कसम।

पुत्तन साहब—अजी जनाब……।

मिरजा जंगी—जी नहीं, खुदा की कसम।

(कशमकश में पर्दा गिरता है।)

छठा दृश्य

(स्थान—मिरजा जङ्गी का जनानखाना। मिरजा जङ्गी मूंछ कट जाने के कारण शोक में पलँग पर पड़े हुए हैं।)

बेगम जंगी—जरा उठो भी, तुम्हें हमारी कसम, इस प्रकार पड़े रहोगे तो मुये गोरे न घुस आयें।

मिरजा जंगी—अब हम क्या उठें बस, यही जी चाहता है, कि कुछ खाकर सो रहें।

बेगम जंगी—तुम इसी तरह पड़े रहोगे तो मुये गोरों को कौन रोकेगा। किसी दूसरे का इतना बूता नहीं। वे तो तुम्हीं से डर कर भागेंगे। कसम जनाब की, यदि कहीं तुम न जाओ तो लखनऊ की बुरी घड़ी आ जाय।

मिरजा जंगी (मुस्कुराकर)—यह तो हम जानते ही हैं। आखिर न कैसे जायेंगे! लो तुम स्वयं ही देखो! भला अब क्या मजा रह गया जाने का! मूँछ ही नहीं, फिर बल कैसा?

बेगम जंगी—(ध्यान से मूँछ देखते हुए) चलो हटो भी! भली चंगी तो मूँछें हैं। बाँई ओर की कुछ बड़ी है तो लाओ उसे मैं बराबर कर दूं (मुस्कुराकर) बस, दस-पन्द्रह वर्ष उम्र कम ही मालूम होगा।

मिरजा जंगी (प्रसन्न होकर)—तुम्हें खुदा की कसम, हमारे सिर की कसम।

बेगम जंगी—कसम है हजरत अब्बास के दरगाह की! जो दस पन्द्रह वर्ष की उम्र कम न मालूम हो तो मेरा नाम नहीं।

मिरजा जंगी—तो फिर लाओ न कैंची, बातें बना रही हो?

(बेगम कैंची ले आती है और मूँछ कतरती है। लेकिन इस तरह, कि अब दूसरी ओर की बड़ी हो गईं)

मिरजा जंगी (आइना देखकर)—अरे यह क्या गजब किया·····?

बेगम जंगी (नाक पर उँगली रखकर)—'उई'!

मिरजा जंगी—अरे गजब किया। तुमने तो और भी सत्यानाश कर दिया और अब·········?

बेगम जंगी—तुम पर तो पागलपन सवार है! तभी तो किसी ने कहा है, कि अपने से दुगुना उम्र का मियाँ ठीक नहीं। कोई बात भी हो। जरा रखो ध्यान से, आइना लो, तुम भी अब लगभग मेरी उम्र के हो गये।

मिरजा जंगी (ध्यान से आइना में देख कर)—जरा, कैंची तुम हमें दो।

कैंची लेकर दोनों मूँछें बराबर कर लेते हैं)

बेगम जंगी (मुसकुरा कर)—तुम्हें हमारी कसम, अब ऐसी ही मूँछें रखना।

मिरजा जंगी (प्रसन्न होकर)—खुदा की कसम, तुम्हें ये पसन्द हैं। (हाथ से बल देकर) ठीक हैं ना! मेरी कसम खाओ। मेरा मरा मुँह ही देखो, सच कहना।

बेगम जंगी—दुश्मन-मुद्दैयों का मरा मुँह देखें। तुम्हारे सिर की कसम, बस, ऐसी ही मूँछें ठीक हैं। भला वह भी कोई ढंग है? निगोड़े हब्शियों-सी मूँछें। मैं तो सदा से कहती आ रही हूँ—यही ठीक हैं?

मिरजा जंगी (प्रसन्न होकर)—अजी वह उम्र के बारे में क्या कहती थीं? दूसरी बातों के बारे में कसमें खा रही हो।

बेगम जंगी—उई, क्या मैं झूठी हूँ?

मिरजा जंगी—अरे यह कौन कहता है! वह तुम उम्र के

बारे में भी तो कुछ कह रही थीं, कि······वह······कुछ······मेरी मूँछों···वह बड़ी मूँछों से मेरी उम्र कुछ अधिक मालूम होती थी······।

बेगम जंगी—क्यों नहीं? आखिर फर्क तो जरूर ही मालूम देगा। बड़ी उम्र वालों की बड़ी-बड़ी मूँछें और लम्बी-लम्बी दाढ़ियाँ होती हैं। देख लो, अपने आप भी। साल डेढ़ साल उम्र कम ही मालूम हो रही है।

मिरजा जंगी—हैं, साल डेढ़ साल! कहीं भूलती तो नहीं हो? अभी अभी तो दस-पन्द्रह साल बताती थीं। मेरी सारी मूँछें कटवा कर अब इस तरह मुस्कराती हो। गजब है खुदा का (बिगड़ कर) तभी तो कसम नहीं खा रही हो।

बेगम जंगी—उई यह तुम्हें हुआ क्या है? कोई बात न बात लड़े मरते हो फिर क्यों नहीं? जिसकी इतनी मूँछें हों। (कुहनी तक बताकर) इसकी मूँछें छाँट कर छोटी कर दी जायँ तो आपही जान पड़ेगा, कि दस-बारह साल का है।

मिरजा जंगी (प्रसन्न होकर)—तुम सच कहती हो। मूँछों की वजह से सचमुच हमारी उम्र कुछ अधिक मालूम होती होगी। और फिर इस नजले ने किसी काम का नहीं रक्खा। जवानी में ही अभागा सफेद करता है।

बेगम जंगी (मुस्कुरा कर)—तो अब गोरों की भी तुम्हें फिक्र है या नहीं? यह भी जानते हो, लोग तुम्हारे बारे में क्या कहते हैं अभी पड़ोसी कह रही थीं, कि तुम्हारे मिरजा को चुन-चुन कर कर गोरा मारेंगे।

मिरजा जंगी—तैयारी तो करना तुम्हारे हाथ है। सफरी किरन वाला बटुआ भर दो। उस कामदार अधिक दामवाले डिब्बे में पान बना देना व बटेरों की थैली में छेद हो गया है। आखिर तीना बटेर जायेंगे ही! अफियून की डिबिया

न भूलना । और वह······रुई······हाँ वह केवड़े से बसा हुआ। नैना भी जायगा।

बेगम जंगी—उई ! यह सब कुछ लड़ाई पर जा रहा है ! कुछ ढाल, तलवार, बन्दूक वगैरह भी जायगी या नहीं ?

मिरजा जंगी—तुम भी क्या आदमी हो ? तलवार नहीं जायगी तो क्या हम गोरों से कबड्डी खेलने जा रहे हैं। मेरी दोनों तलवारें जायँगी, खंजर जायगा, तीतिरियों का छोटा दरबा जायगा। और हाँ, वह मेरा धनुष भी जायगा। और तरकश भी जायगा। देखो वह धनुष का गिलाफ······उसमें तकमा जरूर टाँग देना। बन्दूक भी जायगी। हम उसे वहाँ फत्तू से चलवायँगे।

बेगम जङ्गी—अच्छा तो अब मैं जाती हूँ, सब चीजें ठीक करने !

(जाती है)

मिरजा जङ्गी (चौंककर)—ऐ जी······वह सुरम दान और सलाई न भूलना ! अच्छा ········!

(पट परिवर्तन)

—:o:—

तीसरा अंक

पहला दृश्य

(स्थान—मिरजा जङ्गी का दीवानखाने का दरवाजा। फत्तू खाँ रुए के गिलाफ में बन्दूक लिए खड़ा है। अमदू नाई बटेरों का दरबा तथा दूसरा सामान लिये है। जुम्मन अपनी बटेरें और बटेरों का दरबा लिए है, चार पाँच मजदूरनियाँ नया सामान (बिस्तार, बक्स, हुक्का इत्यादि) लिये खड़ी हैं। तलवारें भी अनुमानतः बिस्तर में ही

हैं; क्योंकि किसी के हाथ या कमर में दिखाई नहीं देतीं; मिरजा जंगी की प्रतीक्षा हो रही है। वे बड़े सज-धज के निकलते हैं। शबनम (एक बारीक सफेद कपड़ा) का अँगरखा पहने हैं, बाईं ओर दो अंगुल की टोपी रक्खे हैं; पट्टों और मूँछों पर तेल मले हैं, दोनों हाथों में दो बटेरें हैं और उन पर रूमाल पड़ा हुआ है, पायजामा पहने हुए हैं, मुँह में गिलौरी दबाये हैं, और दाहिने हाथ पर इमाम जामन (मुसलमानों के आठवें पेशवा) का रुपया बँधा है।)

मिरजा जंगी—चलो भाई, जल्दी चलो। पुत्तन साहब वगैरह इन्तजार करते होंगे।

(यह कहकर आगे आगे चलते हैं। सड़क पर पहुँचते हैं तो मुहल्ले वाले कहते हैं।)

एक—तुम्हें खुदा की कसम मिरजा साहब !

दूसरा—सुभान अल्लाह

तीसरा—फतहयाबी हासिल हो।

(मिरजा जंगी मुसुकरा कर उत्तर में दोनों हाथों से दोनों ओर सलाम करते हैं।)

चौथा—खुदा की कसम, मिरजा साहब गोरों की शामत आ गई।

पहला—गोरों को चुन चुनकर मारेंगे।

दूसरा—जीता हुआ एक भी न छोड़ेंगे।

तीसरा—कच्चा······हा······खा जायंगे, खुदा की कसम।

(मिरजा जंगी दोनों ओर उसी तरह बटेरों को हाथ में लिए सलाम करते मुसकुराते चले जा रहे हैं, कि सामने से पुत्तन साहब नब्बन साहब और बब्बन खां आते हैं।)

नब्बन साहब (देखते ही)—तुम्हें खुदा की कसम······!

पुत्तन साहब—अजी जनाब, चलिये न, जल्दी।

मिरजा जंगी—और बाकी खेमा ?

पुत्तन साहब—सब आगे गई। मैंने कह दिया है, कि हम मिरजा साहब को लेकर आते हैं। सेना तो अब तक मैदान मार चुकी होगी।

मिरजा जंगी—अजी हजरत, सेना तो गई, यह तो हम भी जानते हैं, लेकिन बटेरों के दरबे और थैलियाँ·· ··।

नब्बन साहब—जनाब दरबे भी साथ में हैं और थैलियाँ भी गई।

मिरजा जंगी—और हजरत, वह गुलाम हैदर (बटेर का नाम) भी साथ में है या नहीं? भाई खुदा की कसम, पुत्तन साहब 'जिगरा' (बटेर) पर कैसा रूमाल पड़ा है!

पुत्तन साहब—वाह, क्या कहना है!

[तात्पर्य यह, कि इसी प्रकार बटेरों की बातें करते चले जा रहे हैं]

[पर्दा गिरता है]

दूसरा दृश्य

(स्थान—लखनऊ से दो मील की दूरी पर सात-आठ सौ आदमी पेड़ों के नीचे जगह-जगह बैठे हुए हैं। कुछ अफीम घोल रहे हैं, कुछ बटेर लड़ा रहे हैं। एक ओर एक तोप खड़ी हुई है। मिरजा जंगी, बन्नन खाँ इत्यादि एक ओर एक सफेद चद्दर बिछा कर बैठे हुए हैं। हुक्के का दौर चल रहा है, और बातें हो रही हैं।)

पुत्तन साहब—अजी जनाब, पहली मंजिल तो खतम हुई। अब आगे चलियेगा, या रात में यहीं पड़ाव रहेगा?

मिरजा जंगी—अजी हजरत, लोग बस बे-पर की उड़ाते हैं। अभी अमदू ने पेड़ों पर चढ़कर चारों ओर देख लिया। न कहीं गोरे, और न काले। कोसों तक किसी का पता नहीं। क्या करेंगे आगे जाकर? बस रात को यहीं पड़ाव रहेगा। आदमी हैं, आखिर जानवर तो हैं नहीं, और फिर सिपाही को तो आराम भी चाहिये।

नब्बन साहब—आगये होंगे शहर से हम लोग कोई तीस मील !

पुत्तन साहब—तीस तो नहीं, लेकिन बीस-पचीस मील जरूर आगये होंगे ।

मिरजा जंगी—पैदल फ़ौज इससे ज्यादा कूँच नहीं कर सकती, यहीं ठहरेंगे। लाइये न हजरत, जरा हो जायें दो एक कुश्तियाँ, लाइये फिर थैलियाँ······।

(बटेरों की सभी थैलियाँ लाई गईं । मिरजा जंगी ने अपना बटेर 'शाह जोर' निकाला, और लड़ाने के लिए तैयार हैं ।)

अमदू—अरे मियाँ····· अरे अरे······वह कौन···वह ····· वह······।

नब्बन साहब—किधर······कहाँ·····?

पुत्तन साहब—क्या है बे·····?

(मिरजा जंगी गर्दन लम्बी कर के देखते हैं)

अमदू—अरे मियाँ गोरे, गोरे !!

नब्बन साहब—खुदा की कसम·····।

पुत्तन साहब—अजी हजरत·····!

(सब मुट्ठी की दूरबीन बनाकर ध्यान से देखते हैं । एक गोरा कुछ आगे बढ़ता आता है)

मिरजा जंगी (यह जान कर, कि गोरा ही है)—खुदा की कसम गोरा······लाना मेरी तलवार·····अबे अमदू के बच्चे तलवारें कहाँ रख दीं·····।

(अमदू घबड़ाहट में इधर का सामान उधर फेंकता है । लेकिन तलवारें नहीं मिलतीं । धनुष हाथ आ जाता है ।)

मिरजा जंगी—अबे धनुष ही तो माँग रहा हूँ । अबे तीर कहाँ है ?

नव्वन साहब—या खुदा, मेरा धनुष कहाँ गया? मेरी बन्दूक। अरे तीर कहाँ है?

(सब के सब अपने-अपने हथियार ढूँढते हैं। पुत्तन साहब के हाथ बन्दूक आगई लेकिन गज नदारत। यद्यपि अमदू इनका सामान नहीं लाया था, लेकिन तो भी घबड़ाहट में उसी से पूछते हैं।)

पुत्तन साहब—अबे अमदू के बच्चे, गज कहाँ गया? गज़—गज—गज—ग़—ज।

अमदू—हुजूर, आप की चीजें मैं थोड़े ही लाया था। मैं क्या जानूँ?

पुत्तन साहब—लाहौल बिल कूद! यह बन्दूक भी बिलकुल बेकाम की चीज है।

नव्वन साहब—अजी हजरत, यह लीजिये मेरा गज!

पुत्तन साहब (गज लेने में आनाकानी करते हैं)—अजी हजरत, आप क्या तकलीफ करते हैं?

नव्वन साहब—खुदा की कसम, लीजिये न! मैं तो तलवार से गोरों पर वार करूँगा। आप सकोच न करें, और गज लेकर अपनी ख्वाहिश पूरी करें।

पुत्तन साहब (यह कहते हुए गज लेते हैं)—खुदा की कसम, आप तो काँटों में घसीटते हैं! (गज लेकर) आदाब अर्ज!

(पुत्तन साहब गज लेते हैं और बन्दूक की नली में डालते हैं, लेकिन वह कुछ दूर जाकर रुक जाता है। जोर लगाकर ठोंकते हैं!)

पुत्तन साहब—या खुदा, यह गज भीतर क्यों नहीं जाता है।

(जोर लगाकर गज भीतर ठेलते हैं। कोई चीज है जिसमें गज अँटका था। गज निकाल कर बन्दूक की नाल उलटते हैं। और उसमें से एक विशेष कीड़े के घर की मिट्टी निकलती है।)

पुत्तन साहब—कीड़ों को देखिये हजरत! बन्दूक की नली में घर बनाया है।

(गोरा अब समीप आ जाता है और हलचल मच जाती है। किसी को अवकाश नहीं कि बन्दूकें भरें। अतः सब धनुषबाण लेते हैं। नब्बन साहब भी आ पहुँचे।)

बब्बन खाँ—अजी जनाब, मैं तोप से न उड़ा दूँ।

मिरजा जंगी—अमें नहीं लाहौल बिलाकूव्वत! हम इससे जम कर लड़ना चाहते हैं।

(गोरा सामने आकर खड़ा हो गया। लेकिन कुछ दूर पर। उसके साथ एक हिन्दुस्तानी भी है, जो उँगली से उसे कुछ बता रहा है।)

मिरजा जंगी—नब्बन साहब मारिये अब गोरे को! बिलकुल निशाने में तो है! अब संकोच किसलिए!

नब्बन साहब—मारिये पुत्तन साहब! आप ही शौक कीजिए न!

पुत्तू साहब—अजी हजरत, पुत्तू साहब, मारिये न इस शैतान को!

पुत्तन—अजी जनाब, आप ही न शुरू करें!

पुत्तू साहब—अजी अजरत मिरजा साहब मारिये! खुदा की कसम, मारिये न, इस गर्दन कटवाने वाले को······

मिरजा जंगी—खुदा की कसम पुत्तू साहब आप!

पुत्तू साहब (नब्बन साहब से)—खुदा की कसम······आप अब संकोच किसलिए हजरत!

पुत्तन साहब (पुत्तू साहब से)—खुदा की कसम······आप।

पुत्तू साहब (मिरजा जङ्गी से)—खुदा की कसम······आप।

(मिरजा जंगी को खुदा की कसम आप मिरजा साहब, कह कर विवश कर दिया)

मिरजा जंगी—आदाब अर्ज है, आदाब अर्ज है। आप सब लोग तकल्लुफ करते हैं।

(सब को सलाम करते हैं और फिर धनुष उठा कर धनुष पर बाण चढ़ाते हैं। अभी उन्होंने बाण चढ़ाया ही है कि)

पुत्तन साहब—खुदा की कसम मिरजा साहब, कैसा रोब टपक रहा है!

नब्बन साहब—सुभान अल्लाह!

पुत्तन साहब—क्या कहना·······।

(मिरजा जंगी बाण चलाना छोड़कर आदाब अर्ज, आदाब अर्ज करते हैं। फिर उन्होंने तीर हाथ में लिया, और तारीफ के शब्द चारों ओर से उठने लगे। मिरजा साहब फिर झुक-झुक कर सलाम करने शुरू कर दिये। मतलब यह कि, चार-पाँच बार इसी तरह हुआ। आखी में मिरजा साहब ने 'या अली' कह कर गोरे की ओर तीर छोड़ दिया। तीर थोड़ी दूर पर जा कर गिरा। कदाचित् गोरे को इसकी खबर तक न हुई। लेकिन वह खुद बन्दूक सीधी करके लेट गया। अतः तीर के छूटते ही शोर गुल होने लगा)

सब (एक स्वर में)—वह मारा···।

पुत्तन साहब—सुभान अल्लाह! कैसा निशाना है या अली!

(तलवार चूम कर उछलते हुए)

नब्बन साहब—खुदा की कसम, कैसी निशानेबाजी है।

पुत्तन साहब—क्या कहना है! भाई मिरजा तुम्हें बधाई······कैसा सच्चा निशाना मारा है!

(मिरजा जंगी झुक झुक कर सलाम कर रहे हैं! इसी समय गोरे ने एक गोली चलाई। इधर गोली की आवाज हुई कि इधर सब एक स्वर में चौंक पड़े और डर के स्वर में मुँह से निकल पड़ा 'याअली।')

मिरजा जंगी—अजी हजरत बब्बन खाँ, जनाब नब्बन

साहब, लीजिये, खुदा की कसम लीजिये ! अजी बब्बन खाँ···ए···थ···तोप···ताप···तोप तो···बो···बोप !

पुत्तन साहब—तोप···तोप···तोप···तो···बो···तोप···।

नब्बन साहब—तोप···तोप···।

(बब्बन खाँ तेजी से गोला दागने का मोटा छड़ तोप में डालते हैं। लेकिन वह रुक जाता है। तेजी से छड़ निकाल कर हाथ डालते हैं; और भीतर से कुछ घसीट कर निकालते हैं। एक तोते का घोंसला तीन चार बच्चों सहित उसमें से निकलता है। सब चौंक कर एक स्वर से चीखते हैं, कि 'या अली'। साथ ही सामने से दो-चार गोरे और आ जाते हैं और गोलियों की बौछार होती है। एक गोली मिरजा जंगी की पिंडुली में लगती है। गोरे आक्रमण कर देते हैं, और भगदड़ मच जाती है। पुत्तन साहब, नब्बन साहब और बब्बन खाँ इत्यादि सब भाग जाते हैं। मिरजा जंगी आहत हो जाने के कारण रह गये, चिल्लाते हैं, लेकिन कोई नहीं सुनता। सब के सब भाग गये।

मिरजा जंगी—अमें पुत्तन साहब ! तुम्हें खुदा की कसम···अबे अमदू के बच्चे······अबे बेवकूफ······पुत्तन साहब !

(मैदान साफ हो जाता है ! दो-तीन गोरे मिरजा जंगी के पास पहुँचते हैं और एक उनके लात मारता है।

मिरजा जंगी—खुदा की कसम गोरे साहब ! बड़े असभ्य हैं आप !

गोरा (लात मार कर)—डैम, यू ब्लाडी !

मिरजा जंगी—अजी हजरत गोरे साहब, जनाब···खुदा की कसम।

दूसरा गोरा—यू ब्लाडी !

मिरजा जंगी—खुदा की कसम, गोरे साहब !

(तीन गोरे बटेरों की थैलियां देख पाते हैं और रुपए की थैलियाँ

समझ कर एक साथ ही झपटते हैं, एक गोरा पुत्त_साहब की थैली पाता है।)

मिरजा जंगी—अजी हजरत, वह पुत्त साहब का 'जिगरी' है·····अरे जनाब, यह मेरा 'शाहजोर' है। हैं हजरत!······ यह क्या। ?

(गोरे बड़ी बेफिक्री से रुपयों की जगह बटेरें पाकर इनकी गर्दनें मरोड़-मरोड़ कर जेबों में रख रहे है और मिरजा जंगी तड़प रहे हैं। गोरे बटेरें लेकर मिरजा को लातें मार कर चले जाते हैं।)

(पर्दा गिरता है)

तीसरा दृश्य

(स्थान—जानआलम बादशाह को अँगरेज ले गये हैं)

मिरजा जंगी अपने घर में घायल और मरने के करीब की हालत में बुरी तरह पड़े हुए कराह रहे हैं—"हाय मेरा "शाहजोर" हाय मेरा गुलाम शेर·······।" "लखनऊ लुट गया।" बीबी पास बैठी हुई कोस रही है—" अरे मुये गोरे तुझ पर वज्र पड़े, अरे अभागे गोरे तेरी कब्र में से धुँआ उठे, निगोड़े तेरी कब्र में कीड़े पड़ें।"···इत्यादि इत्यादि।

(पटपरिवर्तन)

—:०:—

शादी की जरूरत

नाटक के पात्र—

अजीज—एक लापरवाह, निठल्ला बिगड़ा हुआ युवक।

अनवर—अजीज का एक गरीब दोस्त।

चन्दूलाल—मुहल्ले के बुजुर्ग सबको उपदेश देनेवाले।

इजाजअली—एक रईस का लड़का, जो अपनी बहन की शादी के लिये इश्तहार देता है और अजीज को अपनी बहन की शादी के लिये चुनता है।

नसीम—इजाजअली का दोस्त।

मंसूर—अजीज का एक अनजान दुश्मन।

चपरासी, खानसामा, और दूसरे आदमी इत्यादि।

पहला दृश्य

दृश्य के पात्र—अजीज, अनवर और चन्दूलाल

(स्थान—अजीज, अपने मकान के बाहरी भाग में आराम कुर्सी पर आराम से सोया हुआ हुक्का पी रहा है। उसके दोस्त अनवर अली का प्रवेश)

अनवर (कमरे में प्रवेश करता हुआ)—अल् सलाम वालेकुम्।

अजीज (उठते हुए)—आइये, आइये, वालेकुम् सलाम, वालेकुम् सलाम।

अनवर—बिस्मिल्लाह, आज-कल तो बहुत जोरों पर हो। मारे खुशी के बिछुन पड़ रहे हो। कुछ तो बताओ, आँखों में ये परियाँ कैसी नाच रही हैं।

अजीज—बस, कुछ न पूछो !

अनवर—फिर भी कुछ बताओ तो !

अजीज—क्या बतावें, बस बड़ की धुन है। बीबी का प्यारा और मीठा ख्याल सदा इसमें छाया रहता है। घर में, चारों ओर, बीबी की एक चलता-फिरता तसवीर दिखाई देती है। बस, इसी ख्याल में सदा डूबा रहता हूँ। बीबी की मिठास घर में चारों ओर बसी हुई जान पड़ती है। (आँखें आधी बन्द किये हुए)········संसार आदू से भरा हुआ एक सपना की तरह मालूम होता है। सोता रहता हूँ, लेकिन ऐसा लगता है, मानों जग रहा हूँ। सारा घर बच्चों का मन बहलाने वाले भूरे की तरह हिलता-डुलता दिखाई देता है। अरे यार हद हो गई! घर में इधर-उधर घूमती हुई मुर्गियाँ भी बीबी की तरह लगती हैं और मुर्गों पर खुद अपने का धोखा होता है। और······

अनवर (जोर से हँसते हुए)—वल्लिल्लाह, क्या कहना है ?

अजीज (बात काटकर)—बस, समझ लो, आज-कल की दुनिया······जान पड़ता है, कि एक मोटा-सा बोबा है।

(जोर से हँसते हैं)

अनवर—लेकिन यार, बात यह है, कि बीबी मिले किस तरह ? वैसे तो दिन में दस ले लो, लेकिन बीबी जिसको कहते हैं, उसका मिलना मुश्किल है। कोई साल भर से मैं खुद कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन बेकार कोशिश भी ऐसी कि यदि कहीं वैसी युरोप में करते तो जरूर रूस के जार बन जाते।

अजीज—अजी हजरत, यह बीबी है, कुछ हँसी खेल नहीं। जानते हैं, बीबी और बादशाहत में क्या फर्क है ? बादशाहत लड़ने से मिलती है। लेकिन खुद नहीं लड़ती, पर बीबी बिना लड़ाई के मिलती है, लेकिन खुद खूब लड़ती है। यह भाग्य

की बात है। कोशिश करना बेकार है। तुम्हारी किस्मत ही कोयला है, तो बस क्या ? आखिर यह बन्दा भी तो है······ तंग आगये। चचा चन्दूलाल·····इलाही खैर······।

(चचा चन्दूलाल का प्रवेश)

अजीज—आदाब अर्ज है चचा।

अनवर—चचा सलाम।

चन्दू—जीते रहो बेटा, जीते रहो। बैठो, बैठो!! कहो बेटा, कुछ नौकरी-चाकरी की फिक्र की ?

अजीज—अजी गोली मारिये नौकरी को।

चन्दू—फिर वही नासमझी! बेकारी बड़ी बुरी चीज है। इस अनवर को देखो, दिन-रात तेली के बैल की तरह नौकरी में जुता रहता है। लेकिन एक तुम हो, जो बेकार······

अजीज—अपनी अपनी किस्मत है। बैल और अरबी घोड़े की किस्मत में फर्क होता है।

चन्दू—याद रक्खो अजीज, काम न करोगे तो घास खोदोगे।

अजीज—आपका मतलब यह है कि अनवर की तरह मैं भी तेइस रुपल्ली की नौकरी कर लूँ। असल में आप इस तरह न मानेंगे, जरा ठहरिये, अभी आया।

(चला जाता है)

चन्दू—न जाने, इसे क्या हो गया ?

अनवर—आजकल शादी का भूत सवार है।

चन्दू—न नौकर, न चाकर! ऐसे निठल्ले को कौन अपनी लड़की देगा ?

(इसी समय अजीज का प्रवेश और चन्दू की बात सुनकर)

अजीज—मैं बताऊँ कि निठल्ले को कौन लड़की देगा ?

यह देखिये, चिट्ठियों का पुलिन्दा। नौकरी, नौकरी, लगा रक्खा है।

अनवर—यह कैसी चिट्ठियाँ हैं ?

अजीज—देखते जाओ ! पहले यह अखबार लो। मैं पढ़ता हूँ। सुनिये चचा ! यह देखिये, इश्तहार है, एक वर की जरूरत एक अच्छे ख्याल और बहुत ही ऊँचे घराने की एक खूबसूरत लड़की के लिये वर की जरूरत है। लड़का होनहार होना चाहिये। अगर नौकरी न करता हो तो कोई हर्ज नहीं। खत किताबत नीचे के पते पर।

सुना आपने चाचा ! हुए कुछ कायल। यह जो आप शादी के लिये, बरोजगार होने की बुरी शर्तें लगा-लगा कर मुहल्ले में जिन्दादिल वाले मुरदों का खून सुखा दिया करते हैं, कहाँ तक ठीक है ? असल में यह शर्त बहुत ही बेकार और मन की लहरों को बरबाद कर देने वाली है।

चन्दू—कोई होगा, बेवकूफ इश्तहार देने वाला लेकिन फिर इस इश्तहार से तुम्हारा मतलब क्या है ?

अजीज—मतलब मेरा यह है, कि अभी चिट्ठी सुनिये। यह चिट्ठी लीजिये। देखिये, यह लिखा है, कि मेरी तस्वीर देखी गयी। इसमे यह लिखा है, कि मुझे पढ़ाई जारी रखनी होगी। और यह लिखा है, कि ससुराल मे 'घर जमाई' बन कर रहना होगा। यह लीजिये, तीसरी चिट्ठी। देखिये, इसमें लिखते हैं, कि शादी में मेरी तरफ के सभी खर्च वे खुद उठायेंगे और इस काम के लिये छिपे-छिपे पाँच हजार रुपये देंगे जिससे कि शादी की खूब धूम धाम हो, और कोई यह न कह सके कि लड़की गरीब घर मे दे दी। यह देखिये, और दूसरी चिट्ठी। इसमे २१ तारीख को मुझे वर दिखावे के लिये बुलाते है, जिससे कि शादी की तारीख वगैरह सब ठीक हो जाय।

मैंने इसके जवाब में लिख दिया था, कि जरूर आऊँगा। लेकिन फिर इसके बाद यह चिट्ठी अभी कल ही आई है, कि जरूरी काम से कहीं बाहर चले गये और अब सिर्फ इतना ही काफी है, कि मैं उनसे १ ता० को टूंडला स्टेशन के वेटिङ्ग रूम में मिल लूँ। नहीं तो मामला दो महीने के लिये टल जायगा। आज पन्द्रह तारीख है, और परसों आपका यह नालायक भतीजा टूंडला के वेटिङ्ग रूम में अपना 'वर दिखावा' करायेंगे। अब कहिये चाचा, क्या राय है?

अनवर—यार खूब रहे, तुम!

चन्दू—खुदा मुबारक करे। लेकिन हमारी समझ में नहीं आता, कि वे हैं कौन?

अजीज—होते कौन? इजाजअली खाँ, खुद लड़की के भाई हैं। बाप मर गया है। घर के रईस हैं।

चन्दू—सौतेली बहन होगी!

अजीज—जी नहीं, सगी बहन है।

चन्दू—तो फिर पागल होंगे!

अजीज—कुछ भी हो, अब यह बताइये, कि क्या राय है?

चन्दू—भैया मेरी राय तो यही है, कि इस शादी पर डालो धूल, और पाँच-पचीस कमाने की फिक्र करो—मिहनत करो।

अजीज—वही, मुर्गे की एक टाँग।

चन्दू—बेटा, तुम जानो, तुम्हारा काम। कहीं किसी फेर-फार में न फँस जाना। अब मैं तो जाता हूँ। खुदा मुबारक करे। लेकिन हमने भी धूप में बाल सफेद नहीं किये हैं। यह इश्तहारबाजी अच्छी नहीं! लो खुदा हाफिज!

अजीज—आदाब अर्ज है चचा।

चन्दू—जीते रहो, जीते रहो, रोजी में तरक्की हो।

अजीज—या लिल्लाह, इन बड़े मियाँ ने तो नाक में दम कर दिया है। लेकिन कुछ न पूछो यार, मैंने भी कैसा कायल किया है। यह तो वही किस्सा हुआ, कि 'बड़े मियाँ का, कि जल ठण्डे।'

अनवर—लेकिन यार, तुमने भी खूब हाथ मारा है। सारा मामला तै हो गया—

अजीज—इसमें कुछ शक भी है ?

अनवर—लेकिन यह तो बताओ, कि तुम तो घर जमाई बनकर रहना बुरा समझते थे, और शादी में ज्यादा खर्च के खिलाफ थे।

अजीज—असल में बात यह है, कि मैंने अच्छी बीबी के लिए इन शहरी उसूलों को छोड़ दिया।

अनवर—लेकिन यह तो बताओ, कि इजाजअली खाँ को तुमने देखा तो है नहीं। फिर पहचानोगे कैसे ?

अजीज—मैंने उन्हें नहीं देखा है तो क्या ? पहले तो उन्होंने मेरी तस्वीर देखी है, और फिर वेटिंग रूम में या आस पास मेरा इन्तजार करते होंगे। मैं उनको खोजूँगा, और वे मेरे खोजेंगे।

अनवर—खुदा मुबारक करे। लेकिन यार हो बड़ी तकदीर वाले ! खूब हाथ मारा !

अजीज—और नहीं तो क्या, तुम्हारी तरह नौकरी की खट-पट में पड़ जायँ।

अनवर—अच्छा भाई, अब जाते हैं, खुदा हाफिज !

अजीज—खुदा हाफिज !

दूसरा दृश्य

(स्थान—टूंडला जङ्कशन के वेटिंग रूम के दरवाजे पर अजीज

एक नवजावान को टहलता हुआ देखता है; जैसे वह किसी के इन्तजार में हो। इसलिए अजीज बढ़कर उससे मिलता है।)

अजीज—अदाब अर्ज।

अजनबी—अदाब अर्ज!

अजीज—माफ कीजियेगा, अगर मैं गलती नहीं करता तो जनाब इस खादिम का इन्तजार······।

अजनबी—ओ हां·····आप·····जी हाँ·········आइये, भीतर आइये।

(दोनों वेटिंग रूम में जाते हैं)

अजीज—मुझे जनाब से मिलकर बड़ी खुशी हुई।

अजनबी—जनाब के बड़े इखलाक का एहसान मैं किस तरह से अदा करूँ?

अजीज—यह आपका भाई-चारा है। असल में तो मैं इस रिश्ते की सलाह का सिर्फ अपने ही लिये नहीं; बल्कि अपने खान्दान के लिए भी फख्र की चीज समझता हूँ।

अजनबी—यह आपकी अक्ल की खूबी है! नहीं, असल में पूछिये तो यह रिश्ता आपके लिए नहीं, बल्कि मेरे लिए और मेरे खान्दान के लिए फख्र की चीज है।

(होटल का खानसामा आता है)

खानसामा—हुजूर, कुछ चाय वगैरह।

अजीज—देखो, दो आदमियों के लिये चाय लाओ उसके साथ कुछ केक वगैरह भी हो।

खानसामा—बहुत अच्छा।

(चला जाता है)

अजीज—मैं उम्मीद करता हूँ, कि जो बात चिट्ठी-पत्री से तै हुई है उसकी याद दिलाने की जनाब को जरूरत नहीं है

और मुझे उम्मीद है, कि कम से कम जनाब की ओर से बात पक्की है।

अनजबी—बिलकुल, बिलकुल। मेरी ओर से तो ढील ढाल का ख्याल ही न होना चाहिये।

अज़ीज़—शादी की तारीख के बारे में अर्ज़ है कि जो भी तारीख जनाब को मुनासिब हो, वही अच्छी है।

अजनबी—जिस तारीख को जनाब को सहूलियत हो वही ठीक होगी।

अज़ीज़—इसके बारे में भला आप मुझसे क्या कहते हैं? असल में तो मुझसे पूछने की ज़रूरत ही नहीं है। बस, इत्तिला देना ही काफी है।

अजनबी—मेरा अर्ज़ यह यह है, कि चूँकि मुझे कोई इन्त-ज़ाम ही नहीं करना है। इसलिये तारीख का सवाल मेरे ऊपर रखना ही बेकार है।

अज़ीज़—जब जनाब को कोई इन्तज़ाम नहीं करना है, तो कायदे से मुझे तो और भी कुछ नहीं करना है।

अजनबी—आपका कहना ठीक है लेकिन असल में बात यह है, तारीख का मामिला कुछ मतलब से लड़की वालों की इच्छा पर छोड़ा जाता है! मामूली इन्तज़ाम सही, फिर भी लड़की वालों को कुछ न कुछ करना पड़ता है।

अज़ीज़—यही तो मैंने कहा। दहेज मुझे नहीं तैयार करना है। सामान मुझे नहीं खरीदना है. जेवर मुझे नहीं बनवाना है, इसलिये मेरे लिये तो सभी तारीख एक सी हैं।

अजनबी—मेरा मतलब यह नहीं है, कि चीज़ और जेवर वगैरह का इन्तज़ाम आपको आनन फानन करने की ज़रूरत होगी, बल्कि मेरे ख्याल में रईसों के कायदे के मुताबिक जनाब

की बहन साहबा का सामान ही खुदा की मेहरबानी से काफी से ज्यादा होगा······।

अजीज (घबड़ा कर बात काट कर)—जी,······क्या कहा जनाब ने ?

अजनबी—मैंने यह अर्ज किया, कि जनाब की बहन साहबा······!

अजीज (फिर बात काटकर)—मेरी बहन ?

अजनबी—जी !

अजीज—लेकिन मेरी तो कोई बहन नहीं !

अजनबी—(चीखकर) कोई नहीं !

अजीज—शायद जनाब को ख्याल नहीं रहा। मैंने अपने पहले ही खत में लिखा था, कि मेरे कोई बहन भाई नहीं। एक बहन थी उसकी मौत हो गई।

अजनबी—अरे, अरे, फिर यह इश्तहार आपने किसका दिया है और फिर मेरा किसके साथ रिश्ता करना चाहते हैं ?

अजीज—माफ कीजियेगा। शायद मैं मजाक के लायक नहीं।

अजनबी—जनाब, इस तरह की बातों का मतलब······ मुझे पहले से ही शक था। यह कैसी हरकत !

अजीज—उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे !

अजनबी (गुस्से में)—मैं आप पर दावा करूँगा।

अजीज—आपने झूठा इश्तहार क्यों दिया ?

अजीज—इश्तहार देने वाले की ऐसी-तैसी ! बुरा हो इश्तहार देने वाले का।

अजनबी—खुद तुम्हारा बुरा हो।

अजीज—बदतमीज !

अजनबी—बेहूदा !

अजीज—चुप बदमाश !

अजनबी—दगाबाज, मक्कार, ठहर तो जा !

अजीज—तेरी ऐसी, तैसी।

(दोनों ऐक-दूसरे पर झपटते हैं। कुर्सियाँ गिरती हैं। एक दूसरे को बदमाश, नालायक और पाजी कहते हुए गुथ जाते हैं। खानसामा डरता हुआ आता है।)

खानसामा—है, हैं, है !!

(दोनों के लड़ने से चाय के ट्रे में धक्का आता है, और चीनी के सभी बर्तन गिरकर टूट जाते हैं।)

खानसामा—बस, बस, बस, जाने दीजिये। पुलिस वाला आ गया।

(शोर सुनकर एक कानिसटेबिल आता है)

कानिसटेबल—क्या गड़बड़ है ?

खानसामा—कुछ नहीं साहब।

(दोनों अलग हो जाते हैं)

कानिसटेबिल—जनाब, यह स्टेशन है। एक साहब बाहर आ जायँ।

(अजीज उठ कर चला जाता है)

तीसरा दृश्य

(स्थान—वेटिङ्ग रूम में मंसूर बैठा हुआ है और अजीज आता है)

अजीज—क्यों जनाब, मुझे ऐसा शक होता है, कि समझने में गलती हुई है।

मंसूर—मैं खुद यही सोच रहा था। क्या जनाब इनाज-अली खाँ नहीं हैं ?

अज़ीज़—बिलकुल नहीं। मेरा नाम तो अज़ीज़ है। आपका नाम ?

मंसूर—बिलकुल नहीं। मेरा नाम मंसूर है।

अज़ीज़—यह क्या मामिला है ?

मंसूर—आप यहाँ कैसे आये ?

अज़ीज़—शायद जिस लिए आप आये ! मुझे इज़्ज़तअली खाँ ने इस जगह मिलने को लिखा था।

मंसूर—आपके साथ साथ भी शायद अपनी बहन का विवाह करने को कहा था।

अज़ीज़—और आपके साथ भी यही हुआ।

मंसूर—बिलकुल यही। देखिये न खत। आप भी खत निकालिये।

अज़ीज़—यह लीजिये। सभी खत मौजूद हैं।

मंसूर—यह देखिये, यह देखिये !

(दोनों खत देखने के बाद कहते हैं)

अज़ीज़—मेरे और आपके यानी दोनों के खत एक से हैं। इस दग़ाबाज़ ने हम दोनों का अच्छा बेवकूफ बनाया। और मज़ा यह कि आपने भी यह न बताया बल्कि उल्टा लड़ पड़े।

मंसूर—लड़ मैं पड़ा या आप ! उस बदमाश ने एक वक्त हम दोनों का चुनाव करके, धोखा देकर यहाँ बेकार लड़ा दिया।

अज़ीज़—उस बदज़ात से बदला लेना चाहिये।

मंसूर—दावा करना चाहिये।

(खानसामा टूटे हुए बरतनों का बिल पेश करता है)

खानसामा—यह लीजिये हुजूर, बरतनों का बिल है। दस रुपये बरतन के दाम, और डेढ़ रुपये चाय वगैरह !

अज़ीज़—दस रुपये के बरतन !

मंसूर—सिर्फ दो प्यालियों, तीन तश्तरियों, और एक चाय-दानी की कीमत दस रुपये कैसे हुई ?

खानसामा—पूरे सेट के दाम देने पड़ेंगे।

अजीज—सेट के भी दस रुपये कहाँ से हो गये।

खानसामा—अब हों, या न हों।

मंसूर—हम दो रुपये से ज्यादा हरगिज नहीं दे सकते।

खानसामा—तो हुजूर को देने पड़ेंगे।

अजीज—बकवास मत करो। बदमाश कहीं का।

खानसामा—ज़रा जनाब सँभाल कर बोलियेगा।

मंसूर—निकल जाओ यहाँ से।

खानसामा—वाह साहब, वाह! एक तो लड़-भिड़ कर बरतन तोड़ डाले और फिर······।

अजीज—बकवास मत करो।

मंसूर—चुप रहो गुस्ताख।

(इसी वक्त इजाजअली खाँ अपने दोस्त नसीम के साथ आते हैं)

इजाजअली—हैं, हैं क्या है ?

खानसामा—एक तो खुद आपस में लड़ कर बरतन तोड़ डाले, और अब दाम नहीं देते। गालियाँ ऊपर से सुनाते हैं।

मंसूर—मत बको।

इजाजअली खाँ—खानसामा, तुम बहुत गुस्ताख हो। दाम तुम्हारे अभी मिल जायँगे। अभी जाओ, और चार आदमियों के लिये जल्दी चाय वगैरह ले आओ।

खानसामा—बहुत अच्छा।

(चला जाता है)

इजाजअली (मंसूर और अजीज की ओर देखकर)—अगर हुक्म हो तो दोनों साहबों की सेवा में कुछ अर्ज करूँ। सब से

पहले तो मैं आपकी अच्छी बातों में दखल देने की माफी चाहता हूँ। फिर इसके बाद इस बात की माफी, कि मैं पहली गाड़ी से न पहुँच सका, जिसकी वजह से आप दोनों साहबों को चाय का सेट तोड़ना पड़ा। शायद आप दोनों साहब अब मुझे पहचान गये होंगे। मेरा नमा इजाजअली खाँ है। और ये मेरे दोस्त मिस्टर नसीम हैं।

अजीज—अरे।

मंसूर—जनाब, जनाब !!

अजीज—ओफ, !

मंसूर—लेकिन, लेकिन—

इजाज—घबड़ाइये नहीं। अब दोनों साहब तो अच्छी तरह आपस में मिल गये। अब मेरे दोस्त मिस्टर नसीम से मिलिये। नसीम साहब आइये। यह मेरे सबसे बड़े मेहरबान अजीज, और आप मिस्टर मंसूर।

नसीम—आप लोगों से मिलकर मुझे बेहद खुशी हुई।

अजीज—खुशी तो मुझे भी हुई। लेकिन पहले मैं यह जानना चाहता हूँ, कि जनाब ने इस जगह हम दोनों को क्यों बुलाया था ?

इजाज—मुझे बड़ा अफसोस है कि आप मुझसे ऐसी बात पूछते हैं, जो आपको अच्छी तरह मालूम है।

अजीज—गरीब-परवर, फजूल बातों को जाने दीजिये। मैं यह अर्ज करता हूँ कि जनाब ने मुझे क्यों यकीन दिलाया कि मेरा बिलकुल चुनाव हो चुका है।

इजाज—सिर्फ इस वजह से यह काम हुआ है, कि मैं आपका चुनाव कर चुका हूँ।

मंसूर (चमककर)—फिर मुझे क्यों बुलाया ? आपको यह हक नहीं था।

इजाज—मेरी समझ में मुझे यह हक था ! लेकिन अगर आप लोग नहीं मानते तो खैर, मैं अपनी गलती मान कर उसकी माफी माँगता हूँ कि मैंने आप दोनों साहबान को पहले ही क्यों न बता दिया ! असल में गरज मेरी ही अटकी है। लड़की वाला हर तरह जा और बेजा दबता है। मैं तो यह चाहता था, कि आप दोनों साहब एक दूसरे से न मिलने पायें, लेकिन मेरी बदकिस्मती ! आप दोनों साहब आपस में मिल-जुल गये। अब मेरी गलती माफ कीजिये। एक साहब को मैं इसके बदले में खुश करूगा। लेकिन अब सवाल यह है, कि जो हालत सामने है, उसमें आप दोनों में से मुझे एक का चुनाव करना है। आप दोनों ही साहब मुझे बेहद पसन्द हैं, लेकिन जो कठिकनाई मेरे सामने है, उसे अप खुद सोच सकते हैं। इसलिए अर्ज यह है कि अगर आप लोग हँसी न समझें, तो जो हालत सामने है, उसे देखते मुझे यही अच्छा मालूम होता है, कि या तो आप दोनों में से एक साहब खुद अलग हो जायँ, नहीं तो आपस में लाटरी डाल लें !

अजीज—लाटरी डाल लें।

इजाज—कम से कम मुझमें तो इतनी हिम्मत नहीं है कि आप दोनों में से किसी का भी निरादर करूँ, यानी यह कह दूँ, कि मैं तुमको पसन्द नहीं करता। अच्छा है, इस मामिले पर आप दोनों साहब आपस में सलाह कर लें।

अजीज—ठीक है। हम दस मिनट के लिए बाहर जाते हैं।

(अजीज और मंसूर चले जाते हैं और प्लेटफार्म के एक दूसरे हिस्से में, जो भीड़-भाड़ से अलग है, दोनों बातें करते हैं।)

अजजी—बड़ा बदमाश है, इसके फन्दे से बचना चाहिये।

मंसूर—बड़ा खतरनाक है, इससे दूर ही रहना चाहिये।

अजीज—फिर क्या करना चाहिये ?

मंसूर—कुछ समझ में नहीं आता।

अजीज—फिर मैं अलग हो जाता हूँ।

मंसूर—आपकी मर्जी।

अजीज—मेरी मर्जी क्या? आप जैसा कहें, कोई सूरत निकालिये।

मंसूर—अब आप अलग हो जाते हैं, तो फिर दूसरी सलाह की क्या जरूरत है?

अजीज—लेकिन यह ठीक नहीं मालूम होता।

मंसूर—क्यों?

अजीज—जरा वैसा मालूम होता है।

मंसूर—वैसा कैसा?

अजीज—तो फिर···तो फिर आप न अलग हो जायँ।

मंसूर—तो फिर लाटरी ही रहने दीजिये।

अजीज—क्या हर्ज है? चलिए फिर कह दें, कि लाटरी से ही बँटवारा ठीक रहेगा।

(वेटिंग रूम में आकर इजाज और नसीम से)

मंसूर—अजीज साहब का और मेरा भी यह ख्याल है, कि लाटरी से ही बँटवारा अच्छा रहेगा।

इजाज—लीजिये जनाब, इन पुड़ियों में से आप दोनों साहब एक-एक उठा लें।

(दोनों एक-एक पुड़िया उठाते हैं)

नसीम—अच्छा उठा ली पुड़िया। अब खोलिये।

(दोनों खोलते हैं)

नसीम—लाइये, मैं देखूँ मंसूर साहब······ओ हो, खाली है, खाली निकल गई। आप कामयाब रहे।···अजीज साहब मुबारक, मुबारक।

मंसूर—और मैं भी हार जाने के बाद मिस्टर अजीज को मुबारकबाद देता हूँ।

अजीज—शुक्रिया, शुक्रिया, तसलीम।

नसीम—भई इजाज, बहनोई मुबारक हो। भाई इस खुशी में बहनोई के गले तो मिल लो। अजीज साहब शर्माइयेगा नहीं।

(दोनों गले मिलते हैं)

नसीम—बस, बस, अब मिल लिए गले। इजाज साहब अब बहनोई से गले मिलने की खुशी में चाय का दौर भी रहे।

इजाज—जरूर, जरूर······खानसामा।

खानसामा—जी हुजूर।

इजाज—चाय, केक और पिष्ट्री वगैरह।

नसीम—जल्दी लाओ।

खानसामा—बहुत अच्छा।

(चला जाता है)

इजाज—क्यों नसीम साहब, आपने अजीज साहब को पहचानने में सोच-विचार कैसे किया था?

नसीम—सोच-विचार तो खैर किया, लेकिन हाँ मैं देखते ही उन्हें न पहचान सका। असल में मैंने तसवीर ही देखा था।

इजाज—तो क्या तसवीर और असल में कोई खास फर्क है?

नसीम—फर्क तो नहीं, लेकिन हाँ देखते ही पहचानना कुछ मुश्किल हुआ। इसलिए तस्वीर देख कर कम से कम मैंने तो यही समझा था, कि तुम्हारी तरह खूब गोरे चिट्टे होंगे।

इजाज—मगर अजीज साहब, खुदा न खास्ता, काले तो नहीं हैं।

जरा इधर तो लाइये तसवीर। हाँ तसवीर पर सफेदी कर दी है।

अजीज—(लँकारकर) जल्दी में जैसी भी फोटोग्राफर ने तसवीर दे दी, मैंने लापरवाही से ले ली।

इजाज—तो खुदा न खास्ता हमारा यह मतलब थोड़े ही है, कि आपने जान-बूझकर फोटोग्राफर को ऐसा कहा होगा कि तसवीर में आपको बिलकुल गोरा चिट्टा और सफेद दिखाये।

अजीज—जी हाँ! अर्ज किया न, कि मैंने तो जल्दी में देखा भी नहीं।

खानसामा—चाय हाजिर है।

नसीम—इधर रक्खो······रख दो, बस, लीजिये अजीज साहब······लीजिए कुर्सी बढ़ा लीजिए। आइये मंसूर साहब।

अजीज (कुर्सी बढ़ाता है)—और आगे आ जाइये, मंसूर साहब!

(चाय शुरू हो जाती है)

नसीम—फोटो के बारे में तो इजाज साहब, असल में बात यह है, फोटोग्राफरों का भी कोई कुसूर नहीं है। बहुत से काहिलों का हाल यह है, कि अगर तसवीर में उन्हें गोरा न दिखाये तो तसवीर ही लौटाल दें।

इजाज—अजी हजरत असल में तो गोरे और काले की बहस ही बेकार है। बात तो यह है, कि आदमी की अच्छाई देखी जाती है।

मंसूर—बात तो ठीक है।

नसीम—अजीज साहब, आप केक नहीं खाते! लीजिये न!

अजीज—जी हाँ, आप लीजिये।

नसीम—माफ कीजियेगा अजीज साहब, आप कुछ हद से ज्यादा······माफ कीजियेगा, कुछ तबीयत में लापरवाही ज्यादा जान पड़ती है।

अजीज—जी नहीं, बिलकुल नहीं।

नसीम—लेकिन शायद अभी आपने कहा था, कि आप ज्यादा लापरवाह हैं। तसवीर लेते वक्त परवा तक न की। यह भी न देखा, कि कैसी है और कैसी नहीं।

इजाज—जल्दबाज जान पड़ते हैं। माफ कीजियेगा अजीज साहब,

अजीज—नहीं साहब, जल्दबाज तो मैं नहीं।

नसीम—यह गलत है, सिर्फ तसवीर लेने में जल्दबाजी की तो उसकी वजह से आप जल्दबाज नहीं कह सकते।

इजाज—और सिर्फ तसवीर लेने की लापरवाही करने पर लापरवाह आपने कैसे कहा ?

नसीम—जी नहीं, आपने सिर्फ तसवीर लेने में लापरवाही नहीं की, बल्कि केक खाने में भी ज्यादा लापरवाही कर रहे हैं।

(सब मिलकर कह-कहे लगाते हैं)

इजाज—अरे नसीम साहब, मैं भूला ही जा रहा था, अरे भाई वह चेक दे दो, कहीं रह न जाय।

नसीम—ओ हो, जेब में ही रह जाता।............यह लीजिये साहब।

(चेक निकालकर देता है और अजीज लेता है)

इजाज—दो हजार का यह चेक है। बाकी तीन हजार इन्शाअल्लाह, इसी हफ्ते में पहुँच जायगा।

अजीज—ऐसी जल्दी क्या थी ?

नसीम—अजीज साहब, आप एफ० ए० में फेल हो गये थे शायद।

अजीज—मैं क्या अर्ज करूँ ? सालाना इम्तहान से पहले सख्त बीमार पड़ गया। बचने की उम्मीद न थी !

इजाज—ओफ हो, शायद इसी गड़बड़ी से फिर पढ़ाई भी जारी न रख सके।

अजीज—जी हाँ, बीमारी ने कमजोर कर दिया। और डाक्टरों ने आराम करने की सलाह दी। क्या बताऊँ, बीमारी का असर दस-ग्यारह महीने तक रहा।

नसीम—तो यह कहिये, कि खुदा ने बड़ी मेहरबानी की।

अजीज—सचमुच खुदा ने बड़ा रहम किया।

नसीम—सचमुच आपकी तन्दुरुस्ती खराब है। तन्दुरुस्ती में कुछ घुन-सा गया है।

अजीज—नहीं तो।

नसीम—आप ही ने तो अभी कहा, कि इम्तहान के बाद बीमारी का सिल-सिला दस-ग्यारह महीने तक जारी रहा।

अजीज (घबराकर)—मैं तो बिलकुल तन्दुरुस्त हूँ। जरा भी शिकायत नहीं, किसी तरह की शिकायत नहीं।

नसीम—दवा तो जारी होगी।

अजीज—नहीं साहब, लाहौल बिलाकूह!

नसीम—अजीज साहब माफ कीजिये, यह बीमारी है, बीमारी का········! यह तस्वीर नहीं है, कि लापरवाही चल जायगी। यह तन्दुरुस्ती का मामिला है। अभी दिन कितने हुए, जो पिछले महीने शिकायत थी। माफ कीजियेगा, और इस पर लापरवाही कि दवा नदारद।

इजाज—अजी साहब, दवा को तो जारी रखना था!

अजीज (घबरा कर और जल कर)—अजीज हजरत आप कैसी बातें करते हैं! लाहौल बिलाकूह; पिछले महीने तो यों ही मामूली-सी सिरदर्द की शिकायत हो गई थी, जो अपने आप ही दूर-सी हो गई।

नसीम—कोई दवा नहीं की?

अजीज—कोई नहीं, खुद ही जाता रहा। कोई बात भी हो !

नसीम—अजीज साहब······अजीज साहब, मेरे प्यारे अजीज साहब, सिर का दर्द बुरी बला है।

इजाज—खुदा बचाये इस खतरनाक बीमारी से।

नसीम—और फिर इसमें लापरवाही !

इजाज—गजब है, लापरवाही गजब है !! बुरी चीज है सिर दर्द।

नसीम—सारी बीमारियों की 'लैनडौरी' यही सिरदर्द तो है। किसी ने कहा है—"आँत भारी तो माथ भारी।" आँतों में खराबी हुई नहीं, कि सिर में दर्द पैदा हुआ और भाथी चलने लगी। फिर जरा लापरवाही हुई नहीं, कि सीने की ओर हमला हुआ। फिर तपेदिक हो जाय, निमोनिया हो जाय, जो कुछ भी न हो जाय, थोड़ा।

इजाज—नसीम साहब, सचमुच, वलीमुहम्मद को जिनकी अभी मौत हुई है, जिसे तपेदिक हुआ था, पहले सिर में दर्द ही हुआ था।

अजीज—(बुरा मान कर) या खुदा, आप कैसी बात करते हैं। मैं तो बिलकुल तन्दुरुस्त हूँ। इम्तहान से पहले, हाँ कुछ बीमार पड़ गया था और चूँकि अच्छी तरह तन्दुरुस्त होने से पहले ही इम्तहान देना पड़ा, इसलिये नाकाम रहा।

इजाज—साल भर की पूरी मिहनत बेकार गई।

अजीज—और क्या ?

नसीम—जो कुछ भी साल भर में पढ़ा-लिखा, वह भूल गये होंगे ! मिहनत तो डट कर की होगी !

इजाज—मिहनती तो आप जान पड़ते हैं।

अजीज—साल भर जैसी कड़ी मिहनत मैंने की है, बस मैं ही जानता हूँ। दिन और रात एक कर दिया।

नसीम—अजीज साहब—सचमुच अजीज साहब की याद रखने की ताकत कुछ-कुछ……मतलब यह है, कि बहुत कमजोर मालूम होती है और कुछ अक्ल भी……मतलब यह कि बिलकुल मोटी अक्ल तो नहीं, लेकिन कुछ……जरा…… मेरा यह मतलब, कि कुछ मोटी अक्ल यानी बिलकुल ही मोटी अक्ल नहीं कह सकते, माफ कीजियेगा, अजीज साहब !

अजीज—जनाब मेरी याद रखने की ताकत और अक्ल हमेशा से तेज है। आपका ख्याल बिलकुल गलत है।

नसीम—हो सकता है, गलत हो।

इजाज—बहुत मुमकिन है, गलत हो।

नसीम—लेकिन अभी-अभी तो आपने कहा था, साल भर की कड़ी पढ़ाई चार दिन की बीमारी में चौपट हो गई। साल भर की पढ़ाई सिर्फ थोड़े दिन में भूल जाना, अक्ल और याद रखने की ताकत की खराबी का बहुत बड़ा सबूत है।

इजाज—लेकिन नसीम साहब, एक बात पर आपने ख्याल नहीं किया। कुछ भी हो, मोटी अक्ल के हों, या याद रखने की ताकत न हो, लेकिन तबियतदार मालूम होते हैं।

नसीम—इसमें तो शक नहीं, कि अजीज साहब बेहद तबीयतदार हैं।

इजाज—इन्हें तबीयतदार मानना पड़ेगा। लेकिन अजीज साहब, आपने अङ्गरेजी कहाँ तक पढ़ी है ?

अजीज—एफ० ए० तक।

नसीम—लेकिन अभी तो आपने कहा था, कि एफ० ए० में फेल हो गये !

अजीज—जी हाँ।

नसीम—तो एफ० ए० तक कहाँ हुई ? यह तो एन्ट्रेस तक ही हुई।

अजीज—एन्ट्रेंस तक ही समझिये।

नसीम—असल में मतलब हमारा यह है कि हम अङ्गरेजी पर जरा जोर देते हैं।

इजाज—बहुत······हमेशा से बहुत जोर देते रहे हैं।

नसीम—असल में अङ्गरेजी बोलने की हमें बड़ी फिक्र है।

इजाज—बेहद फिक्रमन्द रहते हैं।

नसीम—सबब यह है कि हमारी बहन के साथ आपको उम्र काटना है। दिन-रात अङ्गरेजी जानने वालों की सोसाइटी में उठना-बैठना। उम्मीद है, अङ्गरेजी तो आप अच्छी तरह बोलते होंगे!

अजीज—मैं कुछ कह नहीं सकता!

नसीम—अगर बुरा मालूम न हो तो यह लीजिये······ अखबार······जरा पढ़िये तो!

अजीज—माफ कीजियेगा! इस तरह पढ़ना मैं शायद पसन्द न करूँगा।

इजाज—भाई मेरे, अब तुम हमारे हो। बुरे हो तो, भले हो तो! अङ्गरेजी अच्छी बोल सकते हैं, तो अच्छा है। आखिर नाते-रिश्तेदार सभी तो पूछेंगे। फिर हम कब विलायत पास ढूँढ़ते हैं।

नसीम—इसमें क्या हर्ज है?

अजीज—मैं पसन्द नहीं करता।

नसीम—भाई जान, तुम गरीब क्या, और तुम्हारी पसन्द क्या, सालों की हठीली बहस के आगे मियाँ किसी की भी चलती है? यह जो किसी ने कहा है, सच कहा है, कि 'सारी खुदाई एक तरफ और जोरू का भाई एक तरफ' (कहकहा) भाई साहब, अभी तो साले का हठ है। आगे-आगे देखिये होता है क्या? अभी तो 'तिरिया हठ' का सामना करना है।

(कहकहा) जहाँ हठ का सवाल होगा, जोरू और जोरू के भाई की जीत होगी। मजाक न कीजिये, यह साले का हठ है।

इजाज—हाँ भाई, हठ तो है। मंसूर साहब सिफारिश कीजिये।

मंसूर (चीखकर)—अजीज साहब, मैं सिफारिश करता हूँ। आप हारे·········हारना पड़ेगा आपको······यह लीजिये अखबार पढ़िये। मैं होता आपकी जगह तो पढ़ना छोड़ गाने लगता। और गाना तो गाना, नाचने को कहते तो भी 'ना' न करता।

(सब कहकहे लगते हैं)

अजीज—आप लोग मुझे बेवकूफ बनाते हैं।

मंसूर—तो इसमें क्या कुछ शक भी है? मियाँ शादी का ख्याल आते ही अकल को बिदा कर देना चाहिये, और फिर साले-बहनोई का हँसी-दिल्लगी का भो रिश्ता भी तो है।

(कहकहे लगते हैं)

नसीम—जरा पढ़िये न! तकल्लुफ किस की!

अजीज—(खँखारकर अखबार उठा कर पढ़ता है। कोई दस पन्द्रह लाइनें पढ़ता है कि नसीम कहता है)

नसीम—ओ, हो, इलाही तोबा!

इजाज (मुँह बिगाड़कर)–बस, बस, बस !!! रहने दीजिये!

(अजीज रुक जाता)

इजाज—नसीम साहब, अब बताइये, क्या करें?

नसीम—अजीज साहब माफ कीजियेगा, आप अँग्रेजी को हिन्दी में पढ़ते हैं, या मारवाड़ी में। हमारी बहन की जबान बिगड़ जाने का कितना ज्यादा डर है।

इजाज—सवाल सिर्फ यह है, कि अब क्या हो?

नसीम—यही हो, कि जल्द से जल्द एक अँगरेज लेडी

को आप पर मुकर्रर किया जाय, कि आपके साथ रहे और अँगरेज़ी ठीक से बोलना सिखाये।

इजाज़—मिस कूपर कैसी रहेगी ?

नसीम—देखिये साहब, हमारी बहन की एक सहेली है। नवजवान हैं, मिस मेरी कूपर नाम है। बड़ी हँसमुख और बातूनी लड़की है। तकलीफ तो होगी, लेकिन हम जाकर उसे भेजे देते हैं। एक छोटा-सा बँगला उसे दिला दीजिये, और कम से कम दो महीने तक उसके साथ रहिये। खर्च हमारे जिम्मे। इन्तज़ाम सब आप को करना होगा। घर पहुँचकर, जल्द से जल्द इन्तज़ाम करके हमें तार से खबर दीजिये, नहीं तो यह अँगरेज़ी ठीक से बोलने का सवाल इस तरह हल न होगा।

अज़ीज़—बहुत अच्छा।

नसीम—बहुत अच्छा नहीं। लापरवाही न हो। इसमें जहाँ तक हो आप अँग्रेज़ी ढंग से काम करें।

(टन, टन, टन, टन, टन, टन,)

इजाज़—अहो, पञ्जाब मेल आ गया। अज़ीज़ साहब, अब वह असल मामिला, यानी तारीख वगैरह के बारे में······ और कुछ ज़रूरी बातों, खास कर एक बात के बारे में······ बहुत खास बात है। ज़बानी ज़रा ठीक नहीं मालूम होता, इस लिए अच्छा यह होगा, कि मैं एक रुक्के पर लिख दूँ, और आप सोच-समझ कर जवाब लिख दें।

अज़ीज़—जैसी आपकी राय हो।

इजाज़—नसीम साहब, कागज होगा ?

नसीम—यह लीजिये, बल्कि लिफ़ाफ़ा भी।

(इजाज़ जल्दी-जल्दी लिखता है)

इजाज़—यह लीजिये अज़ीज़ साहब !

नसीम—बन्द कर दो लिफाफा !

इजाज—बन्द कर दो, चाहे रहने दो ! यह-यह लीजिये। बाहर जाकर, सोचकर जवाब लिख लाइयेगा।

अजीज (लिफाफा लेकर)—बहुत अच्छा।

(जाता है, लेकिन दरवाजे तक पहुँचता है, इजाज पुकारते हैं।)

इजाज—अजीज, साहब जरा ठहरियेगा (मंसूर से) क्यों मंसूर साहब, आप भी अपने दोस्त को सलाह देते तो अच्छा था···अजीज साहब कोई ऐसी भेद की बात नहीं है। अच्छा है, मंसूर साहब भी सलाह ले लें।

मंसूर—मैं हाजिर हूँ।

अजीज—अच्छा है, आइये !

(मंसूर और अजीज दोनों वेटिङ्ग रूम से निकल जाते हैं और वेटिङ्ग रूम के बाहर, प्लेटफार्म पर, सबसे अलग लिफाफा खोलते हैं)

मंसूर—खुदा जाने, लिफाफे में क्या है ? लाइये, जल्दी खोलिए। (खोलता है) पढ़िए, पढ़िये, जरा जोर से पढ़िये !

(पढ़ता है)

अजीज—मुझे आते ही मालूम हो गया, कि आप दोनों साहब अव्वल नम्बर के बेवकूफ और लफंगा बैल हैं, और बड़े बदतमीज हैं। अक्ल जरा भी नहीं रखते। असल में मेरी दो बहनें हैं, और दोनों बाल-बाल बच्चों। तै तो मैं उसी वक्त कर चुका था, कि आप दोनों साहब अव्वल नम्बर के गधे हैं। लेकिन मुझे पञ्जाब मेल का इन्तजार था। और अब मैं जा रहा हूँ। खुदा हाफिज ! होटल का बिल, आप दोनों साहब, उम्मीद है, चुका देंगे। और दी हुई चेक को भी ध्यान से देख लेंगे ! बस।

आपका खादिम—

इजाज अली खाँ !

"दिलकशी चाल में ऐसी, कि सितारे झुक जायें"!

या

"सरकशी चाल में ऐसी, कि गवर्नर झुक जायें।"

वकील (हँसकर)—तुम भी अजीब आदमी हो। इतवार के दिन मिसलें खूब ढूँढ़ते हो। मुझे आप ४५७ वाली मिसिल दे दीजिये। फिर जाइये बाहर सितारे झुकाइये!

मुन्शी—कानूनी सलाह लेने आई है।

वकील (चौंककर)—अरे, तुम भी अजीब आदमी हो! काम की बात तो बताते नहीं। बड़े सितारे, और गवर्नर झुका रहे हो।

मुन्शी—और कैसे बताऊँ?

वकील (झल्लाकर) फिर क्या ते हुआ?

मुन्शी—मैंने कहा पचास फीस होगी?

वकील—तो क्या बोली?

मुन्शी—कहने लगी, मैं खुद ते कर लूँगी।

वकील—यह कहा, कि पचास फीस सलाह की होगी और बात-चीत करने से पहले रख दे नहीं तो मैं बात-चीत नहीं करूँगा।

मुन्शी—बहुत अच्छा।

(चला जाता है, और फौरन ही सुहीला कमरे में आती है)

सुहीला—क्या मैं आ सकती हूँ?

वकील—जरूर, जरूर, तशरीफ लाइये!

सुहीला—आदाब अर्ज।

वकील—अदाब अर्ज है।

सुहीला—यह नोट हैं पचास, जनाब की फीस।

वकील—ओ हो, शुक्रिया, शुक्रिया!! अजी, इसकी क्या जरूरत थी? ऐसी भी क्या जल्दी? शुक्रिया!

सुहीला—वकील साहब, मैं कुछ कहना चाहती हूँ, माफ कीजियेगा।

वकील—कहिये, कहिये, शाक से कहिये!

सुहीला—यह आप का मुन्शी बड़ा बदतमीज है।

वकील (घबड़ा कर)—क्या हुआ, क्या हुआ?

सुहीला—हुआ यह कि जब मैं आई तो उसने मेरा नाम पूछा। मैंने कहा, कि अगर वकील करूँगी तो बताऊँगी, नहीं तो जरूरत नहीं है।

वकील—बहुत ठीक किया।

सुहीला—लेकिन इसके बाद भी उसने चार बार बदतमीजी से फिर पूछा।

वकील—बड़ा बदतमीज है।

सुहीला—इसके अलावा यह मालूम हो, कि आप तो फीस के मामिले में इतनी मुरौवत करते हैं, और उसकी बदतमीजी देखिये! कहता है कि फीस पहले दो, नहीं तो वकील साहब कहते हैं, कि बात नहीं करूँगा।

वकील (जोर देकर ताज्जुब से)—ओफ···ओह···अजीब बदतमीज आदमी है। भला, फीस भी कोई चीज है! लाहौल बिलाकूह, फीस कहीं मांगी थोड़ी जाती है। मुझे बेहद शरमिन्दगी है।

सुहीला—वकील साहब, मैंने बड़े जब्त से काम लिया है। नहीं तो एक ही घूँसे में मैं उसका जबड़ा तोड़ देती, या उठा कर बरामदे के बाहर फेंक देती।

वकील—मुझे बेहद अफसोस है! क्या मैं उसे बुलाऊँ?

सुहीला—नहीं जनाब, मुझे अपने काम की जल्दी है।

वकील—कहिये, मैं हाजिर हूँ।

सुहीला—मेरा नाम सुहीला कुरैशी······

वकील (चौंककर)—अच्छा आप हैं! मैं पहचान गया जनाब को। आप तो एम० ए० पास हैं।

सुशीला—जी हाँ! मैं सेकेन्ड मिस्ट्रेस हूँ। हूँ क्या, बल्कि थी।

वकील—जी, मैं सब जानता हूँ।

सुशीला—तो फिर मुकदमे का हाल भी मालूम होगा!

वकील—सभी बातें तो नहीं मालूम, लेकिन सुना ज़रूर है (हँसकर) माफ कीजियेगा, अजीब बातें सुनने में आईं!

सुशीला—तो पहले आप उन बातों को बतायें!

वकील—माफ कीजियेगा, मैंने तो अफवाह सुनी है।

सुशीला—आखिर क्या?

वकील—यह, कि आप हिन्दू हो गईं। हिन्दुआना नाम रक्खा है। माफ कीजियेगा, माथे पर इस वक्त भी तिलक लगा हुआ है।

सुशीला—इस वक्त तो नहीं है। (माथा साफ करते हुए)

वकील—छूट गया है······हाँ अब छूट गया!

सुशीला—और क्या?

वकील—(हँसकर)—यह भी सुना, कि आप हिन्दुओं से कुश्ती लड़ती हैं। माफ कीजियेगा, मुन्शीजी को बरामदे से नीचे तो पहलवान ही फेंक सकता है।

सुशीला (कह-कहा लगाकर)—अच्छा और क्या सुना?

वकील—यह भी सुना, कि आप लड़कियों को भी हिन्दुओं से कुश्ती लड़वाती हैं और जब मैनेजर साहब ने पूछ-ताछ की, तो आपने उनको और हेड मिस्ट्रेस साहिबा को ज़ख्मी कर दिया, जिसका मुकद्दमा चल रहा है।

सुशीला—और कुछ?

वकील—और कोई खास बात नहीं! लेकिन माफ कीजि-

येगा, लोगों का ख्याल आपके बारे में कुछ अच्छा नहीं है। बुरा न मानियेगा।

सुशीला—बात यह है, वकील साहब, कि ये सभी बातें सच हैं।

वकील—सच हैं!

सुशीला—जी हाँ!

वकील—तब तो गलती पर आपही हैं।

सुशीला—हरगिज नहीं! अगर आप सुनें, तो मैं आपको अपना किस्सा सुनाऊँ—ताकि आप खुद इन्साफ करें।

वकील—कहिये।

सुशीला—मेरे बाप के, जो मर चुके हैं, एक ऊँचे खान्दान के ब्राह्मण दोस्त थे, नाम विरजन था। ऐसे दोस्त, कि जैसे भाई। बड़े जबरदस्त पहलवान थे। मेरे बाप डाक्टर थे और दवा की गलती से उनकी इकलौती बेटी मर गई! मेरे बाप उनसे भाई की तरह मुहब्बत करते थे। उन्होंने इसके बदले में उन्हें मुझे दे दिया। मैं जब कुछ महीने की थी, विरजन महाराज ने उसी तारीख से मेरे बाप को दूध पिलाने का खर्च पाँच रुपया देना शुरू किया और मेरा नाम सुन्दरी या सुन्दर रख दिया। मैं दो साल की हुई तो मेरे बाप मर गये। और जब मैं तीन साल की हुई, तो मेरी माँ भी चल बसीं। माँ के मर जाने पर विरजन महाराज ने मुझे रखना चाहा तो मेरे भाई, चचा, और रिश्तेदारों ने उन्हें न दिया। हालाँकि मेरे बाप ने लिख भी दिया था। विरजन महाराज, पहलवान आदमी हैं! गुस्से में जबरदस्ती मुझे लेने आ गये। और साथ में दो-चार और अपने पहलवान दोस्त ले आये। इधर में रिश्तेदारों ने इन्कार कर दिया। झगड़ा हो गया। लाठी चली। विरजन महाराज ने

सब को मारा ! एक नौकर की मौत भी हो गई । मुक़दमा चला और उन्हें फाँसी की सज़ा हुई ।

वकील—फाँसी की सज़ा !

सुहीला—जी हाँ ! लेकिन अपील से फाँसी की सज़ा बदल कर—चौदह साल की कैद हो गई ।

वकील—चौदह साल की कैद हो सकती है ! लेकिन यह भी ज्यादा है ।

सुहीला—खैर, कैद काटने के बाद वे फिर मुझे लेने चढ़ दौड़े ।

वकील—फिर आ गये !

सुहीला—जी हाँ, और यह कहा, कि बेटी मेरी है, हरगिज़ न छोड़ूँगा । चाहे अब की फाँसी ही पर क्यों न चढ़ना पड़े ।

वकील—तो अब तो आप काफी बड़ी हो गई होंगी ।

सुहीला—जी हाँ ! मेरी उम्र कोई सोलह साल की थी । वे घर पर चढ़ आये । मैंने छिप कर देखा, और मेरा दिल पसीज गया । वे शेर की तरह गरज कर छाती पीटकर कहते थे, कि बेटी मेरी है, और मैं बिना उसके मर जाऊँगा ।

वकील—अजीब आदमी है !

सुहीला—फिर सलाह बात हुई, और मुझसे इन्कार करा दिया गया ।

वकील—आपने इन्कार कर दिया !

सुहीला—और क्या करती ? लेकिन खूब रोई अकेले में ! लेकिन उन्होंने इन्कार को न माना, और खून-खच्चर पर तैयार हो गये तो पुलिस में रिपोर्ट हुई । एक हाकिम मुक़र्रर हुआ ।

वकील—यह क्यों ?

सुहीला—उन्होंने अर्ज़ी दी थी, कि मैं भी राजी हूँ, और लोग मुझे जबरदस्ती रोकते हैं।

वकील—आपकी उम्र का सवाल!

सुहीला—जी हाँ, यह तै हो गया कि मैं सोलह साल की हूँ।

वकील—फिर क्या हुआ?

सुहीला—यह तै हुआ, कि मैं हाकिम के सामने इन्कार कर दूँ तो विरजन महाराज फिर कुछ न बोलेंगे।

वकील—बड़ा दिलचस्प मुकदमा होगा!

सुहीला—मेरा लिखा हुआ इन्कार मौजूद था। अब हाकिम के सामने जबानी इन्कार करने के लिए बुरका पहनकर सामने आई। मुझसे हाकिम ने जब पूछा, तो मैंने कह दिया, कि लिखावट मेरी है और मैंने इन्कार किया है।

वकील—इन्कार कर गई?

सुहीला—सुनिये तो! मैंने जब इन्कार कर दिया तो विरजन महाराज ने कहा, कि मैं एक बात कहता हूँ। हाकिम ने इजाजत दे दी। इन्होंने चीखकर मुझसे कहा कि अरी तू मेरी बेटी है, बेटी सुन्दरी! इतना कहकर उस देव शकल पहलवान ने बच्चों की तरह रोते हुए अपनी छाती पीट ली और चीख कर कहा—अरी बेटी, तुझे सीने में देख देख करके ही चौदह साल की जेल काटी है। अरे, तुम्हारे बिना मैं मर जाऊँगा। कहाँ जाती है यह कह कर जो हाथ बढ़ाया तो मेरे ऊपर ऐसा जादू हुआ, कि मेरे मुँह के एक चीख निकल पड़ी और बच्चों की तरह दौड़कर मैं उनसे चिपट गई।······

(आवाज नर्म होजाती है और रोती है)

वकील—अरे, आप रोती हैं!

सुहीला—(खँखार कर) जी नहीं, रोती, नहीं······दिल भर आया।

वकील—ठीक, मेरे दिल पर भी असर हुआ। आपने अजीब कहानी सुनाई, फिर क्या हुआ ?

सुहीला—होता क्या ? उन्होंने मुझे गले लगाया और बच्चों की तरह खूब रोये। सब चुप रह गये। उसी तारीख से उन्होंने मुझे ले लिया। मैं उनकी बेटी और वे मेरे बाप। कोई डेढ़ सौ रुपये महीने की जायदाद है, उसे मेरे नाम कर दिया और मुझे तालीम दिलाई। आज आठ साल से मैं उनकी बेटी हूँ और वे मेरे बाप।

वकील—और आपके भाई और दूसरे रिश्तेदार !

सुहीला—फिर सबसे सुलह हो गई, इस वक्त उनकी उम्र सत्तर वर्ष की होगी। लेकिन पूरे पहलवान बने हुए हैं। यही है, वह हिन्दू, जिन्होंने मुझे कुश्ती सिखाई है और कसरत करवाई है। सबेरे उठकर वे मेरे माथे पर तिलक लगा देते हैं, लेकिन स्कूल जाते वक्त मैं उसे साफ कर लेती हूँ। मुझे वे सुन्दरी कहते हैं। बड़े कड़े ब्राह्मण हैं। लेकिन मेरे हाथ का पका खाना खाते हैं। मुहब्बत का यह हाल है, कि अगर मुझे कहीं ज़रा देर लग जाय तो बेकल हो जाते हैं, और मुझे देखने के लिए आदमी दौड़ा देते हैं। अब वकील साहब सोचिये, कि ऐसे बुजुर्ग से अगर मैंने कुश्ती सीखी और वह भी अपने घर पर, बन्द कमरे में गद्दों पर, या दूसरी लड़कियों ने मुझसे कुश्ती सीखी तो स्कूल वालों का क्या नुकसान हुआ ?

वकील—कुछ नहीं, लेकिन माफ कीजियेगा ! यह भी तो मशहूर है, कि बल्देव महाराज, और दूसरे बदमाश भी तो आते हैं।

सुहीला—देखिये, चाचा पहलवान हैं, और उनसे मिलने के लिए हर ढङ्ग के पहलवान आते हैं, तो उनसे मेरा क्या ताल्लुक ? मैं जानती नहीं। आते होंगे !

वकील—लेकिन यह मुकद्दमा कैसे चला ?

सुहीला—असिस्टेन्ट मिस्ट्रेस मिस ट्रमस से मेरी दुश्मनी है। उसी ने मैनेजर साहब और हेड मिस्ट्रेस को पट्टी पढ़ाई। उन्होंने एक दिन मुझे दफ्तर में बुलाकर कहा कि अपने यहाँ लड़कियों को मत बुलाओ। मैंने इन्कार किया तो बात बढ़ गई, मिस ट्रमस बदज़बानी करने लगी, और उसने चचा को बदमाश कह दिया। मैंने उसे एक चाँटा मारा, तो वह और हेड मिस्ट्रेस दोनों मुझे मारने के लिए पिल पड़ीं। मैंने मिस ट्रमस को उठाकर दे मारा, जिससे उसका कूल्हा उतर गया और हेड मिस्ट्रेस की नाक पर एक घूँसा दिया तो वह चक्कर खाकर गिर पड़ी, और नाक से खून जारी हो गया। लेकिन इतने में खुद मैनेजर साहब रूल लेकर मेरी ओर बढ़े, और मुझे चुड़ैल और बदमाश कहा। मैंने दवात उनके खींचकर मारी तो उन्होंने मेरे ऊपर रूल से हमला किया। एक रूल मेरे बायें हाथ में लगा। दूसरा मारा तो मैंने रूल हाथ पर रोक कर जो उन्हें बाहर ली मारा तो बड़ी बुरी तरह गिरे। फिर जो उठकर भागे तो जाला झाड़ने के बाँस दीवाल के सहारे खड़ा था, मैंने लेकर कमर पर दिया तो फिर गिरे। मैं फिर जो लपकी तो निकल गये।

वकील (कहकहा लगाकर)—आपने तो कमाल कर दिया। यह "बाहर ली" क्या होती है ?

सुहीला (ताज्जुब से)—आपने गामा की "बाहर ली" नहीं सुनी ? यह एक दाँव है। दुश्मन का दाहिना हाथ पकड़कर उसके दाहिने पैर में अपना दाहिना पैर बाहर की तरफ से अड़ा दिया।

वकील—आपने तो कमाल कर दिया।

सुहीला—कमाल क्या किया ? अपनी जान बचाई। इसके

बाद मैनेजर साहब और हेड मिस्ट्रेस ने मुझे दिम-मिस करके मुकदमा चला दिया।

वकील—इस मुकदमे में आप मुझे वकील करना चाहती हैं?

सुहीला—असल में इस मुकदमे में मैं सुलह करने जा रही हूँ, और आपको वकील की हैसियत से साथ ले जाना चाहता हूँ।

वकील—कब?

सुहीला—अभी।

वकील—लेकिन किन शर्तों पर सुलह चाहती हैं?

सुहीला—बस, आप मेरे साथ चलिये। और अगर जरूरत पड़े तो मेरी कानूनी मदद कीजिये।

वकील—बहुत खूब! मैं हाजिर हूँ।

सुहीला—दूसरा मामिला इससे भी ज्यादा संगीन का है

वकील—कोई दूसरा मामिला भी है?

सुहीला—जी हाँ!

वकील—वह क्या है?

सुहीला—इसी मुकदमे की शाखा है। वह ऐसा मामिला है, कि मेरे होश ठिकाने नहीं।

वकील—वह क्या?

सुहीला—वह यह, कि मिस ट्रमस छुट्टी लेकर आगरे पहुँचीं, वहाँ मेरे बड़े भाई अब्दुलसमद साहब इन्सपेक्टर आफ स्कूल हैं। उनसे मिलकर उसने न मालूम क्या-क्या जड़ दिया; जिसका फल यह निकला जो इस खत से जाहिर है। यह खत मेरी एक सहेली का है, और उसका कुछ हिस्सा आपको सुना सकती हूँ। पूरा खत नहीं दिखा सकती।

वकील—सुनाइये!

सुहीला—सुनिये, वह लिखती है—

"प्यारी बहन सुहीला, यह ख़त तुमको इसलिए लिखती हूँ, कि तुम होशियार हो जाओ। मिस ट्रमस ने यहाँ आकर मुक़द्दमा और मारपीट का सारा हाल तुम्हारे भाई साहब से कह दिया। वह तुमसे बहुत नाराज़ हैं। अब्बा से मिलने आये थे। मालूम हुआ कि तुम्हारी जबरदस्ती शादी करने का इन्तज़ाम हो गया। वर्मा में कोई डाक्टर हैं उससे तुम्हारी शादी तै हो गई। उसको भी बुला लिया है। कल वह हमारे यहाँ आया था। उसका नाम कप्टन यासीन खाँ है। देवों का देव है। बड़ा भारी जहाज ऐसा मोटर में आया था। यह भी सुना है, कि उसकी बड़ी-बड़ी मूछें थीं, लेकिन जब उसने सुना, कि तुमने वकील साहब को मुछन्दर कहा था तो उनसे मूछें मुँड़वा लीं! अब सुना है, कि आज, नहीं तो कल तुम्हारे भाई उसे लेकर तुम्हारे पास जाते हैं, और तुम्हारे साथ जबरदस्ती उसकी शादी कर देंगे।"

वकील—माफ कीजियेगा, अजीब मामला है। आप खुद समझदार और पढ़ी-लिखी हैं। आपके भाई साहब भी पढ़े-लिखे हैं। मेरा अक्ल काम······।

सुहीला—असल में बात यह है, कि उन्होंने कई आदमियों का चुनाव किया, लेकिन मैंने इन्कार कर दिया

वकील—क्यों ?

सुहीला—क्यों ? अरे साहब एक डाक्टर थे, वे मुझसे मिलाय गये। लेकिन दो चार दिन बाद ही मुझे उनकी नाक पर घूँसा मारना पड़ा। भाग गये, नहीं तो और मारती। दूसरे एक रईस के लड़के वकील थे। वे 'मुछन्दर' शाम को मेरे साथ टहलने निकले। दो और उस्तानियाँ थीं। एक गाय जो दौड़ी तो डर के मारे हम लोगों को मुसीबत में छोड़ कर चीख कर भागे। मैंने उनकी बुजदिली पर नुक्ताचीनी की तो

बिगड़ने लगे; और बात ऐसी बढ़ी, कि मैं मारने पर तैयार हो गई। साथ वालों ने बीच-बचाव कर दिया।

तीसरे हज़रत इस तरह घुने हुए थे, कि मुझे उन्हें सलाह देनी पड़ी, कि आप चलना फिरना बन्द कर दें। नहीं तो कहीं ऐसा न हो, कि चलने-फिरने में किसी का धक्का लगे, और आप बिखर जायँ। इस पर वह बहुत बिगड़े। मतलब यह, कि इसी तरह के दो-चार और थे!

वकील (हँसकर)—इसीलिए अब उन्होंने जबरदस्ती ठानी है।

सुहीला—जी हाँ! और मैं बाहर ज़ाहिर कर चुकी हूँ कि इस मामिले में किसी को दखल देने की आवश्यकता नहीं है। यह मेरा निजी मामिला है, और मैं कोई बच्ची नहीं।

वकील—वह आपके बड़े भाई हैं!

सुहीला—मुझसे अठारह साल बड़े हैं।

वकील—तो क्या आप उनका कहना मान जायँगी?

सुहीला—हरगिज नहीं! मुझे तो उस डाक्टर के नाम से चिढ़ है।

वकील—क्यों?

सुहीला—बड़ी ज़ालिम है। मैंने आपको पूरा खत नहीं सुनाया। एक गोरे को उसने जान से मार डाला।

वकील—जान से मार डाला?

सुहीला—जी हाँ और बच गया।

वकील—वह कैसे

सुहीला—न जाने कैसे? और जब विलायत में था, तो उसके दाँत तोड़ दिये और सजा काटी।

वकील—सजायाफ्ता है?

सुहीला—जी हाँ! और आये दिन यहाँ अँगरेजों से

लड़ता रहता है। अब कहता है, कि मुझसे जबरदस्ती शादी करेगा।

वकील—जबरदस्ती करेगा कैसे ?

सुशीला—भाई साहब के बल बूते पर। आप बताइये, कि इस आफत से कैसे बचूँ ?

वकील—मुझे वकील कर लीजिये।

सुशीला—पहले आप मुझे यकीन दिलाइये, कि आप उस जबरदस्ती शादी को कैसे रोकेंगे ? ऐसे, कि मुझे कुछ भी न करना पड़े।

वकील—कानून के जोर से

सुशीला—वह कैसे ? आखिर मैं भी तो सुनूँ ! मैं आपको डबल फीस दूँगी।

वकील—तसलीम, तसलीम !! मेरी फीस दो सौ रुपये होगी। गारंटी के साथ (मेज पर घूँसा मारकर)।

सुशीला—अगर आप मुझे यकीन दिला दें तो मैं सौ रुपये अभी दूँगी और बाकी बाद में।

वकील—देखिये, बिना आपकी मंजूरी के शादी नामुमकिन है। आप मंजूर तो नहीं करेंगी ?

सुशीला—हरगिज नहीं।

वकील—तो फिर जब वे आयें, आप चुपके से मुझे बुलवा भेजिये और कह देना कि मेरा वकील जवाब देगा। फिर मैं समझ लूँगा।

सुशीला—वह कैसे।

वकील (गरजकर)—वह ऐसे, कि जब आपने इन्कार कर दिया, तो उसके बाद तकाजा भी करना नाजायज और जुर्म है।

सुशीला—फिर इस जुर्म को कौन रोकेगा ?

वकील—मैं रोकूँगा !

सुहीला—वे न रुके तो।

वकील—क़ानून रोकेगा।

सुहीला—वे फिर भी न मानें तो।

वकील (चीखकर)—हथकड़ियाँ डलवा दूँगा। वह डाक्टर है क्या चीज ?

सुहीला—वकील साहब, यह समझ लीजिये, कि मैं भाई साहब से कोई गुस्ताफी नहीं करना चाहती। वह डाक्टर कौन चीज है, मैं उसकी जबरदस्ती का जवाब खुद अच्छी तरह दे सकती हूँ, लेकिन भाई साहब का ख्याल है।

वकील—बेशक, बेशक !!

सुहीला—तो अब मैनेजर साहब के यहाँ चलिये !

वकील—बहुत अच्छा; चलिए।

(उठती है)

सुहीला—चलिए !

वकील—वह······वह ज़रा······वह······मैंने।

सुहीला—जी क्या कहा ?

वकील—वह······ज़रा······असल में बात यह है······ वैसे तो फीस को······कोई जरूरत नहीं है।

सुहीला—ओ हो, माफ कीजियेगा······यह लीजिये !

वकील—नहीं, नहीं बिलकुल जल्दी नहीं······असल में यह कि··कोई जरूरत···माफ हो·····आप शर्मिन्दा करती हैं·····खैर, शुक्रिया ! शुक्रिया !!

सुहीला—बाकी सौ कामयाबी के बाद।

वकील—इन्शा अल्लाह !

सुहीला—चलिये।

वकील—चलिये।

(दोनों चले जाते हैं)

दूसरा दृश्य

स्थान—मैनेजर साहब का बँगला।

(मैनेजर साहब अपने कमरे में बैठे हैं, कि नौकर आता है।)

नौकर—मिस सुहीला अपने वकील के साथ सुलह करने आई हैं।

मैनेजर—बुला लो!

नौकर—बहुत अच्छा (जाता है)

(थोड़ी देर बाद वकील और सुहीला कमरे में आते हैं।)

वकील—आदाब अर्ज है जनाब!

सुहीला—आदाब अर्ज है।

मैनेजर—आदाब अर्ज, आदाब अर्ज, तशरीफ रखिये! मिस सुहीला इधर······इधर शोफे पर आइये।

सुहीला—जी मैं आराम से ······।

मैनेजर—नहीं, नहीं! इधर, यह कैसे हो सकता है?

सुहीला—शुक्रिया!

वकील—जनाबमन, माफ कीजियेगा। वक्त न आपका बरबाद हो, और न मेरा। मैं अपनी मुअक्किला की तरफ से सुलह और इज्जत के साथ सुलह करना चाहता हूँ। इसलिये सुलह की शर्तें क्या हैं, बताने को मेहरबानी कीजिये।

मैनेजर—माफ कीजियेगा। आपकी मुक्किला साहिबा ने बताया नहीं! मैं तो शर्तें को अदालत तक में बता चुका हूँ।

वकील—वह क्या?

मैनेजर—यह, कि मिस टूमस और हेडमिस्ट्रेस की ओर से स्कूल में सौ रुपया चन्दा दें। इनको रुपया देना मंजूर है, लेकिन माफी माँगने से इन्कार है।

सुहीला—माफी का सवाल नहीं।

मैनेजर—फिर सुलह नामुमकिन।

सुहीला—अपना नफा-नुकसान सोच लीजिये।

मैनेजर—मैं क्या सोचूँ ? आप सोचिये। वह कीजिये, जिसमें आपका नुकसान न हो।

सुहीला—मेरा क्या नुकसान हो सकता है ?

मैनेजर (चीख कर)—नुकसान ही नहीं! वकील साहब, इनको समझाइये! इनके बड़े बुजुर्ग चचा साहब सुलह नहीं होने देते।

सुहीला—बेशक! वे कहते हैं, जेल चली आओ, लेकिन माँफी न माँगो।

मैनेजर—और जेल हो गया तो आप क्या करेंगी ?

सुहीला—आपको बचाने की फिक्र!

मैनेजर—मैं·····इससे क्या मतलब·····देखा, वकील साहब आपने!

सुहीला—मतलब आप अच्छी तरह जानते हैं। मैं आपके फायदे के लिये सुलह करना चाहती हूँ।

मैनेजर—मेरा फायदा!

सुहीला (जोर देकर)—जी हाँ, आपका फायदा!

मैनेजर—यह कैसी पहेली ? साफ, साफ-कहिये!

सुहीला—कह दूँ! बुरा तो न मानेंगे!

मैनेजर—हरगिज नहीं।

सुहीला—चाचा कहते हैं, कि माँफी मांगेगी तो जहर खालूँगा। जेल चली जा। इसलिए मैं उन्हीं का कहना मानूँगी।

मैनेजर—फिर फिक्र काहे की ?

सुहीला—फिक्र यह कि वे कुछ और भी तो कहते हैं।

मैनेजर—वह क्या ?

सुहीला—वह यह कि तू जेल चली जा और तेरे पीछे मैं भी मैनजर को मार कर जेल आता हूँ।

मैनेजर—देखिये वकील साहब····देखिये इनकी धमकियाँ, देखिये इनकी ज्यादती !

सुहीला—मैं अपने आप ज्यादती नहीं करती। मैं असलियत बता रही हूँ। मेरे पीछे वे चौदह साल की सजा काट चुके हैं, जो आपको मालूम है, और खून करने को तैयार थे।

मैनेजर—मैं धमकियों में नहीं आता।

सुहीला—धमकी नहीं, यह सच है। फिर आपको मालूम है कि बल्देव महाराज······।

मैनेजर—अव्वल दर्जे का बदमाश है, बलदेव महाराज !

सुहीला—समझ लीजिये आप। चचा को वह चचा कहता है। चचा और उसका बाप एक ही उस्ताद के चेले थे। वह कहता है कि चाचा जी तुम जेल गये, तो तुम्हारे पीछे मैं भी आता हूँ। जहाँ तीन बार काटा, वहाँ एक बार और सही।

मैनेजर—वकील साहब, कहिये, क्या राय है ? देखा आपने अपनी मुवक्किला को !

सुहीला—और बलदेव महाराज के आठ-नौ चेले कहते हैं, कि उस्ताद तुम जेल गये तो हम भी नहीं रुकते। पीछे-पीछे हम भी आते हैं।

मैनेजर—वकील साहब, आप चुप क्यों हैं ? क्या यह सब बदमाश नहीं ?

वकील—बदमाश हैं। तभी तो उनकी बदमाशी से आपको बचाना चाहता हूँ।

सुहीला—मैं जानती हूँ, कि ये सब अव्वल नम्बर के बदमाश हैं।

मैनेजर—और आपकी मदद करने पर तुले हुए हैं।

सुशीला—मेरी बदकिस्मती ! लेकिन मैनेजर साहब, मालूम हो कि इन बदमाशों ने मार-पीट के अलावा और किसी मामिले में सजा नहीं पाई है।

वकील—झगड़ा खतम कीजिये। सुन लीजिये कान खोल कर, कि मैं और मेरा मुवक्किला साहिबा आपके ही फायदे के लिये सुलह चाहते हैं।

सुशीला—मैं हरगिज माफी नहीं माँगूँगी और अगर मुझे जेल या सजा हुई तो मैं क्या, कोई भी ताकत आपको इन पहलवानों से नहीं बचा सकेगी।

मैनेजर—इसका मतलब यह कि नाजायज दबाव से काम लिया जायगा।

वकील—हरगिज नहीं। बल्कि आप की मुहब्बत और अपनी हमदर्दी के ख्याल से……।

(नौकर भीतर आता है और बात काट देता है। घबड़ाहट से)

नौकर—एक बहुत बड़ी मोटर आई है। और उसमें एक डबल आदमी है साहब ! देवों का देव। मिरजा साहब के मकान का पता पूछते थे। मैंने कहा, यहाँ हैं, तो पहले तो कहा हमारा आना कहो, मैंने नाम पूछा तो कहा, हम भी चलते हैं……वह……वह आ गए।

(बरामदे में बूट की जबर्दस्त आवाज, जैसे कोई पैर पटक कर चलता हो। कैप्टन यासीन खां, सुशीला के भाई अब्दुलसमद के साथ भीतर जाते हैं)

कैप्टन यासीन (गरजती हुई शेर की सी आवाज)—हम आ सकते हैं। (दोनों यह कहते हुए भीतर आते हैं)

मैनेजर—आइये, आइये !!

डाक्टर—खाकसार कैप्टन खान !

सुशीला—भाई साहब आदाब !

अब्दुलसमद—जीते रहो।

डाक्टर—और मेरे दोस्त········मिस्टर अबुलसमद साहब······।

मैनेजर—बड़ी खुशी हुई आप से मिल कर।

अबुलसमद—मुझे भी आपसे मिलने का बड़ा शौक था।

मैनेजर—तशरीफ रखिये न······।

अबुलसमद—मुझे जनाब से कुछ कहना है।

मैनेजर—कोई खास बात!

अबुलसमद—जी हाँ।

मैनेजर—आइये, बराबर वाले कमरे में आइये!

(दोनों जाते हैं)

मैनेजर—कहिये··बैठ जाइये!

अबुलसमद—सबसे पहले तो मुझे सुहीला की बदतमीजी की माफी माँगनी है।

मैनेजर—शुक्रिया।

अबुलसमद—आपकी सुलह की शर्तें भी मैंने सुनी हैं। मैं उन्हें मन्जूर करता हूँ।

मैनेजर—शुक्रिया, शुक्रिया!!

अबुलसमद—खास बात इस वक्त यह है, कि मेरे साथी डाक्टर साहब·····अभी अभी मैं चाहता हूँ, सुहीला का उनके साथ निकाह हो जाय। अगर आप इजाजत दें······ हम शहर से काजी साहब को साथ लाये हैं।

मैनेजर—निकाह! इतनी जल्दी!

अबुलसमद—आप जानते हैं, कि इस लड़की की आजादी का क्या हाल है? जो निकल गई तो फिर कुछ न हो सकेगा। मैं परेशान हो गया हूँ; मेरी मदद कीजिये।

मैनेजर—बहुत खूब!

अबुलसमद्—काजी साहब मोटर में बैठे हैं। बुलवा लीजिये। अभी चलिये, और देखिये अगर कोई बखेड़ा खड़ा हुआ तो आप अलग रहियेगा।

मैनेजर—चलिये। बहुत अच्छा। मैं कुछ न बोलूँगा।

(दोनों पहले वाले कमरे में आते हैं)

अबुलसमद्—डाक्टर साहब, गैरहाजरी माफ......।

डाक्टर—मैनेजर साहब कहाँ गये ?

मैनेजर—यह रहा। कहिये,

(काजी साहब आते हैं। बिलकुल अरबी जेहल में)

काजी—अल सलाम वालकुम !

(कई अवाजें वालेकुम् सलाम)

मैनेजर—इधर आइये काजी साहब ! इस तरफ, इस तरफ।

काजी—बहुत अच्छा.......।

मैनेजर—चपरासी.....यह दस्तरखाना लिए क्यों खड़े हो ? इधर मेज पर रख दो। इस मेज पर...।

(लम्बी खामोशी के बाद जिसे वकील तोड़ता है)

वकील—माफ कीजियगा। यह मामला क्या है ? कुछ समझ में नहीं आता। काजी साहब, आप कैसे तशरीफ लाये ?

काजी—बड़े ताज्जुब की बात है। माफ कीजियेगा। और लोग तो खुदा को अक्ल से पहचान लेंगे। लेकिन वकील देख करके भी न पहचानेंगे।

मैनेजर—क्या कहा !

सुहीला (मैनेजर साहब से)—मैनेजर साहब, मैं जरा वकील साहब के साथ जाती हूँ, एक जरूरी काम है।......भाई साहब .....मैं आधे घंटे बाद मिलूँगी।

अबुलसमद्—ठहरो जरा।

सुहीला—मुझे जरूरी काम है।

अबुलसमद—हम भी चलते हैं।

सुहीला—मैं इसके बाद आ जाऊँगी।

अबुलसमद—जरा ठहरो तो।

सुहीला—मैं ठहर नहीं सकती।

अबुलसमद—जरा तो ठहरो। ऐसी क्या जल्दी है? ठहरो—।

सुहीला—जी नहीं।

अबुलसमद—अरे, अरे, अरे, लड़की तो पागल हो गई है। मानती नहीं। (डाँट कर) बैठो, सीधी तरह।

सुहीला—भाई साहब, बात मत बढ़ाइये।

अबुलसमद—क्या बकती है? खबरदार जो जगह से हिली ....काजी साहब, आप शुरू कीजिये।

वकील—(अकड़ा हुआ संजीदह लहजा)—जनाबमन...यह क्या मजाक हो रहा है! मिस साहबा को जाने से कोई नहीं रोक सकता।...लेकिन नहीं, मिस साहबा आप कहीं न जायँ। जनाबमन यह आपकी छोटी बहन हैं तो इसका यह मतलब नहीं, कि आप जबरदस्ती से काम लें।

अबुलसमद (चीखकर) आप कौन?

वकील—और आप कौन?

अब्दुलसमद—मालूम रहे, मैं बड़ा भाई हूँ।

वकील—और मैं बड़े भाई से भी ज्यादा, यानी इनका वकील हूँ।

अबुलसमद—वकील होंगे, आप उस मुकदमें के लिये!

वकील—जी नहीं, बल्की इस मुकदमें के लिये?

अबुलसमद—किस मुकदमें के लिये?

वकील—इसके लिये कि आप जबरदस्ती न कर सकें? कोई निकाह हरगिज जबरदस्ती नहीं हो सकता।

अबुलसमद—यह मुझे मालूम है।

वकील (सुहीला से)—मिस साहबा, आप बिल्कुल न घबड़ाइये। आप चुपचाप बैठी रहिये; बिल्कुल चुप। इन्हें करने दीजिये निकाह ! देखें तो कैसे करते हैं ?

अबुलसमद—काजी साहब, बिसमिल्लाह कीजिये आप।

(काजी निकाह पढ़ाता है।)

डाक्टर (बात काटकर)—मैं कि यासीन खाँ वल्द इबराहिम खाँ········पचास हज़ार रुपये पर······इनसे······इनसे निकाह करना कबूल किया है इनसे······ऐ······जनाब सुहीला क़ुरैशी साहिबा·····निकाह कबूल किया है।

काजी—तकरार कीजिये।

डाक्टर—हम हुज्जत और तकरार किसी से नहीं करते।

काजी—अजी तीन बार कहिये कि कबूल।

डाक्टर—(दहाड़कर)—कबूल किया, पचहत्तर बार हज़ार बार,······कबूल किया, कबूल किया और नहीं, बर्मा से यों ही झख मारने आये हैं। कबूल किया। बिल्कुल कबूल किया······और······।

वकील—मिस सुहीला, आप क्यों घबड़ाती हैं ? खबरदार, यह तो तमाशा है।

डाक्टर—हाँ तमाशा······वकील साहब, ज़रा सोच-समझ कर।

काजी—यह लीजिये, खाना पूरी हो गई। अब दुलहिन का इकरार।

डाक्टर—दुलहिन के इकरार की बिलकुल जरूरत नहीं।

वकील—यह कैसे ?

डाक्टर—चुप रहिये आप ! काजी साहब, आप खुद दुलहिन से पूछिये।

काजी (सुहीला से)—आपको यासीन खाँ साहब वल्द इब्राहिम खाँ साहब से पचास हजार रुपये शादी सिक्के पर निकाह मंजूर है ?

वकील—इस सवाल का जवाब अपनी मुवक्किला की तरफ से मैं दूँगा।

डाक्टर (गरज कर)—आप कौन ?

वकील—मैं अपनी मुवक्किला के निकाह का वकील हूँ। काजी साहब, आप मेरी वकालत से इन्कार नहीं कर सकते।

काजी—अपनी वकालत की सनद।

वकील—खुद मेरी मुवक्किला सामने मौजूद हैं। मिस साहिबा कह दीजिये।

सुहीला—मेरा वकील जवाब देगा। मैंने आपको वकील किया है।

काजी (डाक्टर से)—डाक्टर साहब, आप बताइये, क्या हुक्म है ?

डाक्टर—तो क्या आपने उनको वकील मान लिया ?

काजी—जी हाँ।

डाक्टर (बिगड़ कर)—खूब, खूब हजरत खूब !! फीस तो आपको हम दें और आप दुश्मन से मिल गये। काजी साहब जरा सोच के आप ! जरा सोच के आप !

काजी—यह तो कानूनी मामिला है।

डाक्टर—कानून हम भी जानते हैं। वकील कोई चीज नहीं······आप लिखिये······।

वकील—मुझे निकाह नामंजूर।

काजी—अरे, अब क्या करूँ ?

डाक्टर—वकील साहब, जरा होश से। आप जानते हैं मैं

वकील (हँस कर)—न जाने कितने खूनी मैंने फाँसी पर चढ़ा दिये।

डाक्टर (गरज कर)—खबरदार काजी साहब, आप रजिस्टर में लिखिये—

काजी—क्या लिखूँ।

डाक्टर—दुलहिन का नाम लिखकर खानापूरी कीजिये।

काजी—बिना दुलहिन के इकरार के लिखूँ?

डाक्टर—इकरार कोई चीज नहीं।

काजी—असली चीज तो इकरार ही है।

डाक्टर—फिर वही मुर्गे की एक टाँग। अरे साहब, मुझे दुलहिन के सब रिश्तेदारों ने मंजूर कर लिया है।

वकील—और निकाह।

डाक्टर (बिगड़ कर)—और निकाह के क्या सींग होते हैं? मतलब मेरा यह है, कि इस काजी वाले बखेड़े की न मुझे जरूरत और न इस सूरत में मैं इसका कायल। सोचा था, कि चलो रस्म है, भाई कर लो। आप लोग नहीं मानते, न सही, हटाओ किस्सा।

वकील—फिर इससे क्या मतलब?

डाक्टर—मतलब मेरा यह है, कि क्या फायदा था, जो अपनी दुलहिन को लेकर यों ही चलता बना!

वकील—आप नाजायज दबाव डालेंगे तो इसके लिये कानून मौजूद है है। और अगर आपने ऐसा काम किया, तो दफा ३६६ में आजाइयेगा। मजाक न समझियेगा।

डाक्टर—जनाबमन, कानून का सहारा लेने से तो मैं आपको रोकता नहीं! मैं तो सिर्फ इतना ही जानता हूँ, कि अभी अभी दुलहिन को फूल की तरह उठा कर मोटर में बैठा कर रवाना हो जाऊँगा।

वकील—अरे कोई न रोकेगा आपको !

डाक्टर—रोकने वालों के लिये एक पाँच फायर का रिवाल्वर ! एक बारह फायर की पिस्तौल एक कारतूसी बन्दूक, और एक रायफल मौजूद है। यह तो है उन कुत्तों के लिये, जिनको आप पुलिस कहते हैं·········नहीं तो बहादुरों के लिये और कुछ········।

वकील—वह क्या ?

डाक्टर—इससे भी ज्यादा खतरनाक हथियार !

वकील—क्या ?

डाक्टर—दो जोड़ी जुते।

(कहकहे लगाते हैं सब)

डक्टर—खैर अब माजाक हो चुका, काजी साहब, अब आप जल्दी लिखें।

काजी—कह चुका कि वकील ने इन्कार कर दिया है।

डाक्टर—वकील कोई चीज नहीं यह मैं कह चुका।

काजी—वकील सब कुछ है।

डाक्टर—सब कुछ !

काजी—हाँ ! सब कुछ।

डाकटर—और जो यह वकील साहब 'हाँ' कह दें······ यह कह दें कि कबूल किया तो !

काजी—तो ठीक है।

डाक्टर—फिर आप लिख लेंगे·····निकाह हो जायगा··· फिर कुछ झगड़ा तो न रहेगा।

काजी—बिलकुल न रहेगा और मैं लिख लूँगा।

डाक्टर (वकील साहब से)—वकील साहब !

वकील—कहिये।

डाक्टर—आप कहिये कबूल·····।

वकील—मैं तो नहीं कहता।

डाक्टर—देखिये, ठीक बात नहीं है। मैं बहुत बुरा आदमी हूँ।

वकील—मैं आपको जेल भिजवा दूँगा।

डाक्टर (नरमी से)—मेरे प्यारे वकील साहब, आप इक़रार कीजिये, नहीं तो ठीक नहीं होगा। देखिये, मैं डाक्टर हूँ, और इस तरह गला घोंट सकता हूँ कि आप जल्द से जल्द मर जायँ। मैं आपको मार डालूँगा।

वकील (कहकहा)—बिसमिल्लाह!

(डाक्टर एकदम वकील पर झपटता है और उसका गला दाबता है)

डाक्टर—ऊँ···ऊँ···गला घोंट ? दूँगा।

वकील—अरे मेरा गला···खा खा···आ···ओ ओ···।

डाक्टर—चपरासी···दरवाजे बन्द कर दो···कोई रोके तो गोली मार दो···कोई गोली।

वकील—गो···गो···का···अरे अरे अरे···गा गा···मेरा···।

डाक्टर—कहो कबूल किया।

वकील—कबूल······अ···।

मैनेजर—अरे छोड़िये······गजब!

डाक्टर (दहाड़कर)—चपरासी···गोली मार दो।

चपरासी—बहुत अच्छा······खबरदार!

मैनेजर—अरे मरा

काज़ी—खुदा के लिए।

डाक्टर—बोलो, बोलो (वकील का गला ढीला करता है)

वकील—(हाँफ कर और जोर से सांस लेकर)—कबूल किया!

डाक्टर—पूरी बात, पूरी बात, पूरी बात!

वकील—गा···आ···अरे छोड़ो, कहता हूँ कबूल किया अपनी मुवक्किला की तरफ। कहता हूँ······। केप्टन यासीन

खाँ को निकाह में ऊपर कही हुई शर्तों पर कुबूल किया। आह, आह, आह !! हाय मरा !

डाक्टर—काजी साहब आप लिखिये···। देखते क्या हैं ?

काजी—खुदा की शान देखता हूँ।

डाक्टर—लिखिये साहब ! काजी साहब, आप शान बाद में देखियेगा।

काजी—लाहौल बिलाकूह !

वकील—आ·····आह ·····।

डाक्टर—वकील साहब चुपचाप पड़े रहिये। काजी साहब (चीखकर) लिखिये······।

काजी—यह रजिस्टर सरकारी है।

डाक्टर—हम भी जानते हैं।

काजी—फिर कैसे लिखूँ ?

डाक्टर (बिगड़कर)—आपने कहा था, कि वकील कह दे तो लिख दूँगा और फिर कोई झगड़ा न होगा। अब यह कैसी हरकत !

काजी—जबरदस्ती करने को कब कहा था ?

डाक्टर—न जबरदस्ती, न जबरदस्ती ! यह क्या गजब है काजी ! सोचिये ! दुलहिन का भाई मुझे बर्मा से बुलाया है। दुलहिन का चाचा, दुलहिन का मौसा, दुलहिन का मौसी, मामू और भाई सब मुझे पसन्द करते हैं और लड़की देना मंजूर करते हैं। और आप वकील का अड़ंगा लगाते हैं, तो वकील भी कह देता है। अब लड़ाई है आपने अपनी जबरदस्ती और जबरदस्ती ! जरा होश में हो काजी साहब !

काजी (नरमी से)—डाक्टर साहब, मैं मजबूर हूँ।

डाक्टर—देखिये काजी साहब, आप दुश्मन से मिल गये। लिखिये आप, (डाँटकर) लिखिये !

काजी (गिड़गिड़ाकर)—मैं कैसे लिखूँ ? खुदा और खुदाई कहर से डरता हूँ ।

डाक्टर (दहाड़कर)—अरे मैं खुदा खुदा का कहर हूँ काजी साहब !

काजी— खुदा के कहर से डरता हूँ ।

डाक्टर—तो आप नहीं लिखेंगे ?

काजी—(चुप रहता है)

डाक्टर—बोलिये !

काजी—लिखने से फायदा क्या होगा ? निकाह नाजायज्ञ ।

डाक्टर (चीखकर)—अजी मुझे इस बखेड़े की जरूरत ही कब थी ? लेकिन तुम नहीं मानोगे । तेरा काजी की······ अरे हों······हों !!

(काजी का गला दबता है)

काजी—ओ ओ, अरे म······ओ ओ······।

(गला दबाने की दूसरी आवाजें)

डाक्टर—मार ड लूँगा ।

मैनेजर—डाक्टर साहब, यह क्या ?

अबुलसमद—छोड़ो ।

डाक्टर—चपरासी······चपरासी······गोली ।

चपरासी—हटो साहब, हटो साहब, (पिस्तौल दिखाकर)

काजी—लिखता हूँ लिखता हूँ ······—।

(छोड़ता है)

डाक्टर (गरजकर)—अभी लिखो, एक मिनट में । जान से मार डालूँगा ।

काजी—यह लो······यह लो······लिख दिया ।

डाक्टर (सुहीला से)—बेगम साहिबा, मेरी दरख्वास्त है, कि खाकसार के साथ चलिये ।

सुहील—(चुप)

डाक्टर—मेरी प्यारी बेगम साहिबा ..... (उठकर हाथ पकड़ कर उठाता है ।)

सुहीला (चीखकर)—अरे मेरा हाथ टूटा ! छोड़िये ।

डाक्टर—आह ! माफ कीजियेगा । जोर से दब गया । माफ कीजियेगा । मैं बहुत अदब से माफी माँगता हूँ । मुझे ख्याल रखना चाहिये था, कि औरतों के हाथ कमजोर होते हैं और जोर से नहीं दबाना चाहिये । मुझे उम्मीद है, आप माफ करेंगी ।

सुहीला—(चुप)

डाक्टर—आइये, उठिये । मैं हाथ जोर से हरगिज न पकड़ूँगा ।

सुहीला—आप जोर से हाथ दबाते हैं......अरे मेरा हाथ टूटा ।

डाक्टर—ओह.....माफ कीजियेगा......आइये तशरीफ लाइये ।

सुहीला—तो हाथ छोड़िये ।

डाक्टर—आपका हाथ छोड़ दूं ! खुदा न करे.....आइये आइये !!

सुहीला—अरे, अरे, भाई साहब, भाई साहब !!

डाक्टर—भाई साहब से मिलियेगा !

सुहीला—लेकिन निकाह !

डाक्टर—वह तो हो हो गया ।

सुहीला—नहीं हुआ ।

डाक्टर—न सही ।

सुहीला (पस्त आवाज में)—काजी साहब, काजी साहब !!

काजी—कहिये !

सुहीला (पस्त आवाज में)—निकाह में खामी है।

डाक्टर—फिर पुख्ता कर लेंगे! चलिये!

सुहीला—बस, एक बात!

डाक्टर—न एक और न आधी।

सुहीला—काजी साहब, रजिस्टर में लिख लीजिये, लिख लीजिये!!

काजी—क्या लिखूँ?

सुहीला—बेरजामन्दी।

डाक्टर—अच्छा काजी साहब, लिख लीजिये। खुदा हाफिज, हजरत खुदा हाफिज! फिलहाल तो हम जाते हैं।

(डाक्टर अपनी दुलहिन को लेकर जाता है और सब कहते हैं खुदा हाफिज, खुदा हाफिज)

डाक्टर (गरजकर)—खुदा हाफिज।

नौजवान डाक्टर

पात्र—डाक्टर, कम्पाउण्डर, मिर्जा, कुछ मरीज।

स्थान—डाक्टर के घर का एक कमरा।

पहला दृश्य

कम्पाउण्डर (डाक्टर साहब से)—चलिये न दवाखाने में, तीन मरीज बैठे इन्तजार कर रहे हैं।

डाक्टर—सिर्फ परीशान करने आये हैं, या कोई काम का भी है।

कम्पाउण्डर—सूरत-शकल से दो काम के आदमी मालूम होते हैं। मरीज की सी सूरतें हैं, लेकिन तीसरा हट्टा-कट्टा है।

डाक्टर—वह टेलीफोन?

कम्पाउण्डर—टेलीफोन तो ज्यों का त्यों बिगड़ा पड़ा है। हालाँकि टेलीफोन आफिस वालों का खत आया था, कि कल हमारा मिस्त्री आकर ठीक कर जायगा, लेकिन अभी तक नहीं आया।

डाक्टर—लेकिन सुनो तो, क्या जरूरत है, टेलीफोन की? मुफ्त में महीने के महीने मुट्ठी भर रुपये चले जाते हैं आज तक कभी एक भी मरीज तो टेलीफोन के जरिये नहीं आया।

कम्पाउण्डर—लेकिन नहीं जनाब, कोई टेलिफोन पर पूछे या न पूछे, कम से जब बीमार आकर बैठते हैं और आप टेलीफोन पर जबरदस्ती की बात-चीत करते हैं, तो मरीजों पर बहुत अच्छा असर पड़ता है।

डाक्टर—यह तो मैं भी जानता हूँ। क्या अच्छा न होगा कि हम एक बनावटी टेलीफोन का आला रख लें। दो-दिन से, जब से यह बिगड़ा था, आखिर काम चल ही रहा था।

कम्पाउण्डर—यह भी ठीक है, इसलिये अच्छा है कि आज ही टेलीफोन आफिस को खत लिख दीजिये, कि अब अपना मिस्त्री न भेजें और हमारे यहाँ से टेलीफोन हटा लें। लेकिन अब जल्द चलिये, मरीज़ इन्तजार कर रहे हैं और मैं कह कर आया हूँ कि अभी आते हैं, मरीज़ को देखने गये हैं।

डाक्टर (जँभाई लेते हुए)—मरीज़ तो सब मर गये अभागे! कहाँ धरे हैं मरीज़। तांगा ले लो एक।

दूसरा दृश्य

(स्थान—दवाखाने में चार-पाँच मरीज बैठे हैं। डाक्टर साहब पहुँचते हैं। टेलीफोन ऐसा बिगड़ा है, कि बातचीत नहीं हो सकती। लेकिन घंटी देता है। मरीज खड़े हो जाते हैं और डाक्टर ऐसे कुर्सी पर बैठते हैं, जैसे कोई घबड़ाया हुआ हो। और बैठते ही आवाज देते हैं)

डाक्टर—कम्पाउण्डर साहब!

कम्पाउण्डर—जी !

डाक्टर—देखिये, जिस कदर जल्दी हो सके, इस मरीज की दवा इसके घर भेजवाइये ! इसका आदमी आता ही होगा। मुझे हर तीन घण्टे बाद खुद मरीज को देखने जाना होगा। सब डाक्टर जवाब दे चुके हैं। लेकिन मैंने तीन दिन में अच्छा कर देने का जिम्मा लिया है। आप मिहनत से काम कीजिये। सत्तर रुपये आपके इनाम के तै किये हैं। बस, दुआ कीजिये।

कम्पाउण्डर—इन्शा अल्लाह खुदा ने आपके हाथ यश ही ऐसा दिया है। आखिर अहमद अली साहब को भी तो सभी डाक्टरों ने जवाब दे दिया था।

डाक्टर—हेलो प्लीज, आप कहाँ से बोलते हैं ?········· अच्छा आप है······आदाब अर्ज है······कहिये, फरमाइये। राजा साहब अब गये हैं।······अच्छा, अच्छा, खूब······ हैं, यह क्यों ?······· खुदा की मेहरबानी है······यश देने वाला वह है, मैं भला क्या चीज हूँ······तसलीम, तसलीम ! मजाक करते हैं शायद !·········यह तो खुदा की शान है, कि मेरी तीन खुराक मे ही फायदा हुआ। नहीं तो मेजर रसल उससे कहीं ज्यादा होशियार डाक्टर हैं।·········जी, जी, खतरे में तो राजा साहब जरूर थे, लेकिन अब जरा भी डर नहीं·····हो ही जाती है गलती। मेजर रसल क्या, बड़े बड़े डाक्टरों से भी गलती हो सकती है।·········अरे हो········· शुक्रिया, शुक्रिया······ऐसी जल्दी आखिर क्या थी ? खैर शुक्रिया। मेरा सलाम राजा साहब से कह दीजियेगा।········· कम्पाउण्डर साहब को भेजता हूँ········दस बजे भेजूँगा। बहुत अच्छा आदाब अर्ज।

(टेलीफोन का आला रखते हुए मुसकुरा कर कम्पाउण्डर साहब से)

अरे भाई कम्पाउण्डर साहब, लीजिये मुबारक हो। ज़रा दस बजे याद करके चले जाइयेगा। राजा साहब से अपना और मेरा इनाम ले आइयेगा। पचपन रुपये आपको दिये हैं और जो चेक दें, लेते आइयेगा। मेजर रसल का इलाज बन्द कर दिया गया।

कम्पाउण्डर—अजी मैं तो पहले ही कहता था, कि 'नाम बड़ा और दरशन थोड़ा' क्या जानें मेजर रसल! और जानें भी तो, यश हाथ में नहीं तो कुछ नहीं।

एक मरीज—बेशक, अगर हाथ में यश नहीं तो कुछ भी नहीं।

कम्पाउण्डर—और दवाओं को चुनने में तो डाक्टर साहब अपना सानी नहीं रखते।

(डाक्टर साहब अब मरीजों की ओर निगाह फेरते हैं।)

डाक्टर—कहिये, आपको क्या शिकायत है?

(साथ ही फिर चुपके से टेलीफोन की घंटी बजा दी और जल्दी फिर आला उठा लिया)

डाक्टर—हेलो······जी हाँ······जी जी आदाब अर्ज··· कहिये दोस्त आये······अच्छा···लेकिन नहीं साहब, इस वक्त मरीजों को छोड़कर कैसे आऊँ!··लाहौल बिलाकूवत, डबल फीस क्या बला होती है······माफ कीजिये······मैं तो बहुत मामूली खादिम हूँ। समझा, लेकिन खुद सोचिये। मैं अपने मरीजों को देखे बिना किसी तरह भी नहीं आ सकता।··· जी यह वसूल है मेरा···बस आध घण्टे या घण्टे······बशर्ते कि मरीज कोई न रहे···बस···मैं खुद।

(मरीजों से खुद कहता है)

भला बताइये, आप लोगों को देखे बिना कैसे चल दूँ।

कैसे-कैसे आदमी होते हैं। मैं डबल फीस ले लूँ, लेकिन जल्द आऊँ। लाहौल विलाकूह !

(मरीज से)

हाँ तो आपको क्या शिकायत है ?

मरीज—जी मैं मरीज-वरीज कुछ नहीं, मैं तो मिस्त्री हूँ बिजली घर का। आपने यों ही लिख दिया टेलीफोन बिगड़ा हुआ है। कल भी लिखा और परसों भी, बेकार मुझे हैरान किया आपने !

(जेब से फार्म निकलता है)

दस्तखत कर दीजिये कि तेरा अली मिस्त्री ने टेलीफोन ठीक कर दिया और अब कोई खराबी नहीं।

(डाक्टर साहब जल्दी से सिर झुकाते हैं, और घबड़ाहट के साथ दस्तखत कर देते हैं

मिस्त्री—आदाब अर्ज है, मेरी फीस का बिल बिजली घर मे जरा जल्दी अदा कर दीजियेगा।

डाक्टर (जबान से अपने आप निकलता है)—अच्छा, अच्छा जल्दी जाइये।

(मिस्त्री चला जाता है)

—:o:—